Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ

(सूरत अन्निसा आयत :135)

अनुवाद: हे लोगो जो ईमान लाए हो अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान ले आओ और उस किताब पर भी जो उस ने अपने रसूल पर उतारी है और उस किताब पर भी जो उसने पहले उतारी थी।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक क़ादियान बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

वर्ष 6

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

अंक-3

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

7 जमादी सानी 1442 हिज्री कमरी 21 सुलेह 1400 हिज्री शम्सी 21 जनवरी 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

दुआ करें कि यह वर्ष जमाअत के लिए संसार के लिए इन्सानियत के लिए बाबरकत हो

हम भी अपना कर्तव्य अदा करते हुए पहले से बढ़कर ख़ुदा तआला की ओर झुकने वाले हों और संसार वाले भी अपने जन्म के उद्देश्य को समझते हुए अल्लाह तआला का हक़ अदा करने वाले बन जाएं।

प्रत्येक अहमदी के सपुर्द एक बहुत बड़ा काम किया गया है, इसके निर्वाह के लिए पहले अपने अंदर प्यार और मुहब्बत और भाई चारे की भावना पैदा करें और फिर संसार को इस झंडे के नीचे लाएं जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बुलंद किया था, जो अल्लाह तआला के एकेश्वरवाद का झंडा है, तभी हम बैअत का हक़ अदा करने वाले बन सकते हैं तभी हम अल्लाह तआला के फ़ज़लों के वारिस हो सकते हैं और तभी हम नए वर्ष की मुबारकबाद देने के और लेने के हकदार ठहराए जा सकते हैं। प्रत्येक अहमदी पुरुष, महिलाएं, युवा, बच्चे, वृद्ध इस बात को समझते हुए यह प्रण करे कि इस वर्ष मैंने संसार में एक इन्क़िलाब पैदा करने के लिए अपनी समस्त विशेषताओं को प्रयोग करना है।

इर्शादात आलीया सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहत

(955) हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि ईदुलअज़हा के दिन नमाज़ के बाद नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें संबोधित किया। फ़रमाया : जिसने हमारी नमाज़ की तरह नमाज़ पढ़ी और हमारी क़ुर्बानी की तरह क़ुर्बानी की तो उसने ठीक क़ुर्बानी की और जिसने नमाज़ से पहले क़ुर्बानी की चूँकि वह नमाज़ से पहले हुई उस की कोई क़ुर्बानी नहीं। इस पर हज़रत अबूबर्दा बिन नयाज़ ने जो हज़रत बरा (बिन आज़ब)के मामूं थे,कहा : हे रसूलुल्लाह ! मैं ने तो अपनी बकरी नमाज़ से पहले ज़िबाह कर ली थी। मैं तो यह समझता था कि आज खाने पीने का दिन है और मैं ने चाहा कि प्रथम बकरी जो ज़िबाह हो वह मेरे ही घर में हो इस लिए मैं ने अपनी बकरी ज़िबह कर दी और नमाज़ को आने से पहले नाशता किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : तुम्हारी बकरी तो गोश्त की बकरी हुई, उसने कहा : या रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम ! हमारे निकट एक वर्ष की पठिया है जो मुझे दो बकरीयों से भी ज़्यादा प्यारी है। क्या वह मेरी ओर से क़ुर्बानी के लिए काफ़ी होगी? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : हाँ। तुम्हारे बाद किसी के क़ुर्बानी रूप में काम न आएगी।

(सही बुख़ारी, भाग 2किताब अल्-ईदेयन, प्रकाशित 2006 क़ादियान)

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने अपने ख़ुत्बा जुमआ 1 जनवरी 2021 में फ़रमाया :

आज नए वर्ष का पहला दिन है और पहला जुमआ है। दुआ करें कि यह वर्ष जमाअत के लिए संसार के लिए इन्सानियत के लिए बाबरकत हो। हम भी अपना कर्तव्य अदा करते हुए पहले से बढ़कर ख़ुदा तआला की ओर झुकने वाले और अपनी इबादतों के मयार बढ़ाने वाले हों और संसार वाले भी अपने जन्म के उद्देश्य को समझते हुए अल्लाह तआला का हक़ अदा करने वाले बन जाएं और एक दूसरे के हुक़ूक़ को ख़त्म करने के अतिरिक्त अल्लाह तआला के आदेशों पर चलते हुए एक दूसरे के हक़ अदा करने वाले बन जाएं अन्यथा फिर अल्लाह तआला अपने रंग में संसार वालों को उनके कर्तव्यों की ओर ध्यान दिलाता है। काश कि हम और संसार के समस्त लोग इस महत्त्वपूर्ण बिंदु को समझ जाएं और अपनी दुनिया-और-अंतिम ठिकाने को सँवार सकें।

अत: यह वर्ष मुबारकबादों का वर्ष उस समय बनेगा जब हम अपने कर्तव्यों को इस तौर पर अदा करने वाले होंगे कि लोगों को समझाएँ संसार को समझाएँ और ज़ाहिर है कि यह सब करने के लिए हमें अपनी हालतों के भी जायज़े लेने होंगे। हम जो युग के इमाम मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम को मानने वाले हैं क्या हमारी अपनी हालतें ऐसी हो चुकी हैं कि हम अल्लाह तआला के हुक़ूक़ अदा करने के साथ विशेषता अल्लाह उस के बंदों के हुक़ूक़ भी अदा करने वाले हैं या अभी हमें अपनी इस्लाह करने और एक दूसरे की प्यार, मुहब्बत की भावनाओं को ग़ैरमामूली मयारों तक लाने की आवश्यकता है। अत: प्रत्येक अहमदी को ध्यान देना चाहिए कि उस के सपुर्द एक बहुत बड़ा काम किया गया है और इस के निर्वाह के लिए पहले अपने अंदर प्यार और मुहब्बत और भाई चारे की भावना को पैदा करें अपने समाज में, अहमदी समाज में और फिर संसार को इस झंडे के नीचे लाएं जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बुलंद किया था और जो अल्लाह तआला के एकेश्वरवाद का झंडा है तभी हम अपनी बैअत के उद्देश्य में सफल हो सकते हैं तभी हम बैअत का हक़ अदा करने वाले बन सकते हैं तभी हम अल्लाह तआला के फ़ज़लों के वारिस हो सकते हैं और तभी हम नए वर्ष की मुबारकबाद देने के और लेने के हकदार ठहराए जा सकते हैं। अल्लाह तआला हमें इस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और प्रत्येक अहमदी पुरुष, महिलाएं, युवा, बच्चे, वृद्ध इस बात को समझते हुए यह प्रण करे कि इस वर्ष मैंने संसार में एक इन्क़िलाब पैदा करने के लिए अपनी समस्त विशेषताओं को प्रयोग करना है। अल्लाह तआला इस की प्रत्येक अहमदी को तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

हमारी ख़ुशीयां चाहे वे वर्ष के आरंभ की हों या ईद की, असल तो उस समय होंगी जब हम संसार में प्रत्येक ओर अल्लाह तआला के एकेश्वरवाद का झंडा लहराने वाले बनेंगे जिसे लेकर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आए थे। ख़ुशियां उस समय होंगी जब इन्सानियत इन्सानी क़दरों को पहचानने वाली बनेगी। जब आपस की नफ़रतें मोहब्बतों में बदल जाएँगी। अल्लाह तआला इस ख़ुशी के सामान भी हमें जल्दी

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

गवर्नमेंट जो बात शरीयत के अनुसार करती है वह मिन्कुम में शामिल है।

ख़ुदा तआला किसी क़ौम की हालत नहीं बदलता जब तक कि स्वयं क़ौम अपनी हालत को तबदील न करे।

जिस धर्म में कर्म नहीं वह धर्म कुछ नहीं।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

ताऊन के कारण

अब मैं फिर मूल विषय की तरफ़ लौटता हूँ। दूसरा कारण गन्दगी। तीसरा कारण ज़हरीलापन, चौथा कारण बुख़ार, पांचवां फोड़े। अब इस में एक मतभेद है कि क्या मूल फोड़े हैं या तप। डाक्टर तप को असल बतलाते हैं और यूनानी फोड़ा को मूल ठहराते हैं। मेरे निकट यूनानियों की राय सही है। क्योंकि तौरात में भी फोड़ों का ही वर्णन है। (अल्लाह अल्लाह कितनी ईमान की ताक़त बढ़ी हुई है। तौरात में असल फोड़े क़रार दिए हैं। जो ख़ुदा का कलाम है। सम्पादक) हाँ तप अनिवार्य है। कई बार तप स्थापन के रूप में होता है और कभी नहीं भी। बल्कि बीमार तप से पहले ही विदा हो जाता है। चिकित्सा की दृष्टि से प्रमाणित हुआ है कि तप से पहले भी विदा हो जाता है। अत: मूल तप नहीं बल्कि फोड़ा है। फोड़ा यदि चीरा जाता है और मवाद निकल जाता है तो तप भी कम होता जाता है यहां तक कि अच्छा हो जाता है। बहरहाल यह हलाक करने वाली और भयानक बीमारी है। और यही कारण है कि गर्वनमेंट बावजूद यह कि वह सच्ची हमदर्दी और पूरी सहानुभूति के साथ प्रजा की भलाई में व्यस्त है परन्तु बदनाम हो गई है। कारण इसका यह है कि गर्वनमेंट को शीघ्र सूचना नहीं मिलती। और यदि मिलती भी है तो क्या-किया जाए? कि मरीज़ उसके अधिकार में नहीं। जहां तक नेक नीयत और मानव जाति की इस सहानुभूति के विचार से जो ख़ुद अल्लाह तआला ने मेरे दिल में डाल रखा है। मैंने उन परामर्श पर जो गर्वनमेंट ने ताऊन के रोगियों के बारे में प्रकाशित की हैं। ग़ौर किया है। और मैं बिना ख़ौफ़ तथा लअनत के कहता हूँ कि ये परामर्श बहुत ही उचित और समय अनुकूल हैं। जैसे यह कि इस घर को या कई बार आवश्यकता के समय मुहल्ला को ख़ाली किया जाए और मरीज़ को अलग रखा जाए। ये सब बिल्कुल ठीक और दरुस्त हैं। हाँ यदि कोई यह कहे कि बच्चा यदि ताऊन से बीमार हो और वह नियमों की दृष्टि से अलग किया जाए तो माँ बाप से जुदा हो कर वह मर जाएगा परन्तु ऐसे एतराज़ करने वालों को मालूम हो कि माँ बाप उसके साथ जा सकेंगे परन्तु वह भी इसके साथ ताऊन ही के मरीज़ क़रार दिए जाएंगे। اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ गर्वनमेंट की नीयत बिल्कुल नेक है और वह लोगों को फसाद में डालना नहीं चाहती। गर्वनमेंट ने बुरी नीयत या बुराई से ऐसा विचार नहीं किया।

ऊलिल अम्र (राज्य अधिकारियों) की आज्ञाकारिता

और मेरी तो समझ में नहीं आ सकता कि गवर्नमेन्ट को लाभ क्या हो सकता है क़ुरआन में आदेश है। اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ (अल् निसा -60) अब ऊलिल अम्र (राज्य अधिकारियों) की आज्ञाकारिता का स्पष्ट आदेश है। यदि कोई कहे कि गवर्नमेंट मिन्कुम में शामिल नहीं तो यह उसकी बड़ी ग़लती है। गवर्नमेंट जो बात शरीयत के अनुसार करती है वह मिन्कुम में शामिल है। जो हमारा विरोध नहीं करता वह हम में शामिल है। स्पष्ट रूप में क़ुरआन से प्रमाणित होता है कि गवर्नमेंट की आज्ञाकारिता करनी चाहिए और उसकी बातें मान लेनी चाहिऐं। प्राय मुसलमानों को तो यह चाहिए था कि ताऊन की रोकथाम के बारे में गर्वनमेंट को शुक्र गुज़ारी के मैमोरियल भेजते। बजाय शुक्रगुज़ारी के नाशुक्री हुई और इस के अतिरिक्त कोई कारण नाराज़गी का मालूम नहीं होता कि औरतों की नब्ज़ें देखते हैं। प्रथम तो गर्वनमेंट ने इस एतराज़ पर पूरा ध्यान दे कर इस को दूर भी कर दिया और दवाइयां निर्धारित कर दीं परन्तु मैं कहता हूँ कि यदि ऐसा न भी होता तो भी एतराज़ की गुंजाइश न थी। ऐसी अवस्था और हालत में जहां ख़ुदा का क़हर नाज़िल हो और हज़ारों लोग मरें वह कट्टर पर्दा जायज़ नहीं है। कहते हैं कि एक बार एक बादशाह की बीवी मर गई और कोई उसको उठाने वाला भी न रहा अब इस हालत में पर्दा क्या कर सकता था। मुहावरा मशहूर है "मरता क्या न करता।" हदीस शरीफ़ में आया है कि यदि बच्चा गर्भ में हो तो कभी मर्द उसको निकाल सकता है। हमारे धर्म में खेद नहीं है। जो खेद करता है वह अपनी नई शरीयत बनाता है। गर्वनमेंट ने भी पर्दा में कोई खेद नहीं किया और नियम अब बहुत आसान होते जाते हैं जो परामर्श और सुधार लोग प्रस्तुत करते हैं गर्वनमेंट उन्हें ध्यान से सुनती और उन पर उचित और समय की मांग के अनुसार ध्यान देती है। कोई मुझे यह तो बतलाए कि पर्दा में नब्ज़ दिखाना कहाँ मना रखा है।

सआदत के मार्ग पर चला करें

बात यह है कि पवित्रता और संयम की ओर ध्यान देना चाहिए और सआदत के मार्ग धारण करने चाहिए तब ही कुछ होता है। اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ (अर्राद :12) ख़ुदा तआला किसी क़ौम की हालत नहीं बदलता जब तक कि स्वयं क़ौम अपनी हालत को तबदील न करे। जाने अनजाने कुधारणा करना और बात को अन्तिम सीमा तक पहुंचाना बिल्कुल व्यर्थ बात है। ज़रूरी बात यह है कि लोग ख़ुदा तआला की ओर ध्यान दें, नमाज़ पढ़ें, ज़कात दें, दूसरों के अधिकार नष्ट न करने और अनैतिकता से रुक जाएँ। यह बात पूर्णता प्रमाणित है कि कभी कभार जब एक बुराई करता है तो वह सारे शहर और घर की हलाकत का कारण हो जाता है। अत: बुराइयाँ छोड़ दो कि वे हलाकत का कारण हैं। जालंधर और होशियारपुर के 80 गांव पीड़ित हैं। फिर क्यों अज्ञानता की जाए। और गर्वनमेंट पर जाहिलाना तौर पर कुधारणा न करो।

यदि तुम्हारा पड़ोसी कुधारणा करता हो तो उसे समझा दो। कहाँ तक इन्सान ग़फ़लत करेगा। उस दिन से डरना चाहिए जब एक बार ही महामारी आ पड़े और तबाह कर डाले। हदीस में आया है कि समय से पहले दुआ स्वीकार होती है। ख़ौफ़ तथा ख़तरा में जब इन्सान पीड़ित होता है तो ऐसे वक़्त में तो हर व्यक्ति दुआ की और लौट सकता है। सौभाग्यशाली वही है जो अमन के समय दुआ करे। इन्सान उन लोगों की हालत का अध्ययन करे जो इस ख़तरा में पीड़ित हैं। यहां से तो बहुत क़रीब है। आदमी वहां के हालात देखे ले। अभी तक जालंधर के ज़िला में तरक़्क़ी पर है। यद्यपि होशियारपुर के ज़िला में कमी पर है।

नमाज़ों को बाक़ायदा इल्तिज़ाम से पढ़ो।

परन्तु मैं विश्वास नहीं करता अभी जाड़ा आता है। ख़ुदा तआला की शरण लो और नमाज़ों को नियमित रूप से इल्तिज़ाम से पढ़ो। कभी लोग एक ही समय

शेष पृष्ठ 9 पर

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

ख़ुत्बः जुमअः

क्या मैं तुझे ऐसी बात न बताऊं जो तेरे लिए सेवा से बेहतर है? तुम अपने बिस्तर पर जाते हुए तैंतीस बार सुब्हान-अल्लाह कहो, तैंतीस बार अल्हम्दो लिल्लाह कहो और चौंतीस बार अल्लाहु-अकबर कहो।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़ुलफ़ाए राशिद और दामाद अब्बू तुराब हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु अल् मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के प्रशंसनीय गुणों का वर्णन ।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा अपनी दरिद्रता और ग़रीबी के अतिरिक्त संयम और थोड़ी वस्तु पर संतुष्टि का उदाहरण दिखाया करते थे।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मुझे लड़ते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ध्यान आता था तो मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साएबान की ओर भाग जाता था लेकिन जब भी मैं गया मैं ने आप अलैहिस्सलाम को सिज्दे में गिड़गिड़ाते हुए पाया और मैंने सुना कि आप अलैहिस्सलाम की ज़बान पर यह शब्द जारी थे कि يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ हे ख़ुदा मेरे ज़िंदा ख़ुदा, हे मेरे ख़ुदा ज़िन्दगी बख़श आक़ा।

चार मरहूमीन श्रीमान कमांडर चौधरी मुहम्मद असलम साहिब आफ़ कैनेडा, श्रीमती शाहीना क़मर साहिबा पत्नी क़मर अहमद शफ़ीक़ साहिब ड्राईवर नज़ारत उलिया और उनके बेटे अज़ीज़म समर अहमद, और श्रीमती सईदा अफ़ज़ल खोखर साहिबा पत्नी मुहम्मद अफ़ज़ल खोखर साहिब शहीद का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

पाकिस्तान में अहमदियों के अत्यधिक विरोध को दृष्टिगत रखते ही विशेष दुआ की तहरीक।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 4 दिसम्बर 2020 ई 4 फतह 1399 हिज्री शम्सी स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले ख़ुत्बे से हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का वर्णन चल रहा था। आज भी इसी सम्बन्ध में वर्णन करूँगा। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के भाईचारा के बारे में रिवायत में है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को दो बार अपना भाई क़रार दिया। एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुहाजरीन के मध्य मक्का में भाईचारा स्थापित फ़रमाया। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुहाजिरीन और अन्सार के मध्य मदीना में हिजरत के बाद भाईचारा स्थापित फ़रमाया और दोनों बार हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया।اَنْتَ اَخِيْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ तुम दुनिया और आख़िरत में मेरे भाई हो।

(उसोदुल ग़ाबा अल् मारेफतिल सहाबा ले इब्ने असीर, भाग 4 पृष्ठ 88 वर्णन अली रज़ियल्लाहु अन्हु बिन अबी तालिब, दारुल क़ुतुब अल्इलमिया बेरूत2016ई)

एक रिवायत के अनुसार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु बिन अब्बू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत सहल बिन हुनै के मध्य भाईचारा का रिश्ता स्थापित किया।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद,भाग 3 पृष्ठ 16 बाब वर्णन अली रज़ियल्लाहु अन्हु इब्ने अबी तालिब, प्रकाशित दारुल क़ुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2017 ई)

यह भाईचारा कब कब हुआ? इस बारे में तारीख़ में वर्णन मिलता है कि भाईचारा दो बार हुआ। इसलिए सही बुख़ारी की एक व्याख्या अल्लामा कुस्तुलानी वर्णन करते हैं कि भाईचारा दो बार हुआ। प्रथम बार हिजरत से पूर्व मक्का में मुहाजिरीन में जिन में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबु बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के मध्य, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु के मध्य, हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु के मध्य और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और अपने मध्य भाईचारा स्थापित फ़रमाया। फिर जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना पधारे तो मुहाजिरीन और अन्सार के मध्य हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु के घर में भाईचारा स्थापित फ़रमाया। इब्ने सअद वर्णन करते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सौ सहाबा के मध्य भाईचारा स्थापित फ़रमाया अर्थात पचास मुहाजरीन और पचास अन्सार के मध्य।

(ईरशाद अल्सारी शरह बुख़ारी, भाग 8 पृष्ठ 410-411 हदीस नम्बर 3937 दारुल क़ुतुब अल्इलमिया बेरूत 1996 ई)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु जंग बदर सहित समस्त जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए केवल जंग तबूक में शामिल न हुए। जंग तबूक में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको घर वालों की देख रेख के लिए निर्धारित फ़रमाया था।

(उसोदुल ग़ाबा मअरफतिस्सहाबा ले इब्ने असीर, भाग 4 पृष्ठ 92 वर्णन अली रज़ियल्लाहु अन्हु बिन अबी तालिब, दारुल फ़िक्र प्रकाशक बेरूत 2003 ई)

हज़रत वर्ष बाह बिन अबु मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि हज़रत सअद बिन उबादह रज़ियल्लाहु अन्हु हर समय पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ओर से झंडा उठाने वाले होते थे परन्तु जब लड़ाई का समय आता तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु बिन अबु तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु झंडा ले लेते।

(उसदुल ग़ाबा फी मअरिफतुल सहाबा ले इब्ने असीर, भाग 4 पृष्ठ 93 वर्णन अली रज़ियल्लाहु अन्हु बिन अबी तालिब, दारुल फ़िक्र प्रकाशक बेरूत 2003)

जंग उशेरा जमादी ऊला दो हिज्री में हुआ था। इतिहास और सीरत की पुस्तक में इस जंग का नाम जंग उशेरा के अतिरिक्त जंग ज़ुलउशेरा, ज़ातुलउशेरा और उसेरा भी वर्णन हुआ है। उशेरा एक किला का नाम है जो कि हिजाज़ में यम्बू और ज़ुलमरवह् के मध्य स्थित है। इस के सम्बन्ध में विस्तार से वर्णन फ़रमाते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब इस प्रकार लिखते है कि जमादिल ऊला 2 हिज्री में क़ुरैश मक्का की ओर से कोई ख़बर पाकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुहाजिरीन की एक जमाअत के साथ मदीना से निकले और अपने पीछे अपने रज़ाई भाई अबु सल्मा बिन अब्दुल असद को अमीर निर्धारित फ़रमाया। इस युद्ध में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कई चक्कर काटते हुए अंततः समुंद्र तट के क़रीब यम्बू के निकट स्थान उशेरा तक पहुंचे और जबकि क़ुरैश का मुक़ाबला नहीं हुआ परन्तु इस में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़बीला बनु मुद्लिज के साथ एक मुआहिदा फ़रमाया और फिर वापस तशरीफ़ ले आए।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम .ए, पृष्ठ 329)(लुग़ातुल हदीस, भाग 3 पृष्ठ 110-111 अशीरा शब्द के अधीन)(सीरतुल हल्बिया,भाग 2 पृष्ठ 175 वर्णन मग़ाज़ी, ग़ज़वातुल अशीरा, प्रकाशित दारुल क़ुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)(अद्दलाएलुल न्बविय्या लिल् बहिकी, भाग 5 पृष्ठ 460 प्रकाशित दारुल क़ुतुब अल्इलमिया बेरूत1988 ई)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु उस युद्ध में शामिल हुए थे। इस के अनुसार मसनद अहमद बिन हम्बल की रिवायत इस प्रकार है कि हज़रत अम्मार बिन यासिर वर्णन करते हैं कि जंग ज़ातुल उशेर में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और मैं सफर के साथी थे। जब आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस स्थान तशरीफ़ ले गए

और वहां क़ियाम फ़रमाया तो हमने बनु मुद्लज के लोगों को देखा कि वे खजूर के बाग़ात में अपने एक चश्मे पर काम कर रहे हैं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझे फ़रमाया हे अबु यक्तान तुम्हारी क्या राय है? क्या हम उन लोगों के निकट जाएं और देखें वे क्या कर रहे हैं? अत: हम उनके निकट आए और उनके काम को कुछ देर देखा। फिर हमें नींद आने लगी तो मैं और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु वहा से चले और ख़जूरों के मध्य मिट्टी पर ही लेट कर सो गए। अल्लाह की क़सम! हमें नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अतिरिक्त किसी ने न जगाया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें अपने पांव से छू कर जगाया जबकि हमारे जिस्मों पर मिट्टी लग चुकी थी। उस दिन नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के शरीर पर मिट्टी देखकर फ़रमाया। हे तुराब ! फिर आप ने फ़रमाया क्या मैं तुम्हें दो अत्यधिक बुरे आदमियों के बारे में ना बताऊं। अबू तुराब का वर्णन पिछली बार भी ख़ुत्बे में हुआ था कि मस्जिद में सोए हुए थे। मिट्टी लग गई थी तो आप ने कहा अबूतुराब ! अबूतुराब के नाम से पुकारा। उस समय से आप का उपनाम यह भी हो गया था या हो सकता है उस समय से आपने यह नाम रखा हो, बाद में भी हो या दोनों स्थान पर फ़रमाया हो। जो भी पहले की घटना है। पहले की घटना तो यही लगती है। बहरहाल क्या मैं तुम्हें दो अत्यधिक बुरे आदमियों के बारे में न बताऊं ! हमने कहा हाँ या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आपने फ़रमाया पहला व्यक्ति समूद की क़ौम का उहेयुमिर था जिस ने सालेह अलैहिस्सलाम की ऊंटनी की टांगें काटी थीं और दूसरा व्यक्ति वह है जो अली रज़ियल्लाहु अन्हु तुम्हारे सिर पर वार करेगा यहां तक कि ख़ून से यह दाढ़ी गीली हो जाएगी।

(मसनद अहमद बिन हम्बल , भाग 6 पृष्ठ 261 मसनद अम्मार बिन यासिर, हदीस 18511 अलेमुल क़ुतुब प्रकाशक बेरूत 1998 ई)

जंगा सफ्वान, बदरुल ऊला जमादिउल आख़िर में 2 हिज्री में हुई थी। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब ने उसके बारे में विस्तार से इस प्रकार लिखा है कि अभी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जंगे उशेर से वापसी पर मदीना पधारे हुए दस दिन भी नहीं गुज़रे थे कि मक्का के एक रईस कुरज़ बिन जाबिर फेहर ने क़ुरैश के एक दस्ता के साथ पूर्णता होशियारी से मदीना की चरागाह पर जो शहर से केवल तीन मील पर थी अचानक आक्रमण किया और मुसलमानों के ऊंट इत्यादि लौट कर जाते रहे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह सूचना मिली तो आप तुरन्त ज़ैद बिन हारिस को अपने पीछे अमीर निर्धारित कर के मुहाजरीन की एक जमाअत को साथ लेकर उस के पीछा करने में निकले और सफ्वान तक जो बदर के निकट एक स्थान है उस का पीछा किया परन्तु वह बच कर निकल गया। इस जंग को प्रथम जंग बदर भी कहते हैं।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद पृष्ठ 330)

इस युद्ध के अवसर पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को सफ़ेद झंडा प्रदान फ़रमाया था।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद,भाग 2 पृष्ठ 253 वर्णन अदद मुग़ाजी ग़ज़वा व सिरायाह, प्रकाशित दारे अहया अत्तुरास बेरूत लबनान 1996 ई)

बदर के युद्ध में 2 हिजरी के अनुसार मार्च 623 ई को हुआ था और इस का वर्णन और इस में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में इस प्रकार वर्णन मिलता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत ज़ुबेर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत सअद बिन अबी वकास रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत बसबस बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु को मुशरिकीन की ख़बर पता करने के लिए बदर के चश्मा पर भेजा। उन्होंने क़ुरैश को अपने जानवरों को पानी पिलाते हुए देखा और मुशरिकीन की इस जमाअत को पकड़ कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में पेश किया।

(अत्तबकातुल कुबरा सअद, भाग 2 पृष्ठ 256 जंगे बदर, प्रकाशित दारे अहया अत्तुरास अलअरबी बेरूत लबनान 1996ई)(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब,पृष्ठ 349)

बदर के युद्ध के समय पर जब दोनों लश्कर आमने सामने थे तो सबसे पहले राबेया के दोनों बेटे शेएबा, उत्बा और वलीद बिन उत्बा निकले और युद्ध की दाअवत दी तो क़बीला बनू हारिस के तीन अन्सारी मआज़ और मऊज़ और औफ़ जो अफरा के पुत्र थे उनकी ओर से मुक़ाबले के लिए निकले परन्तु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह नापसंद फ़रमाया कि मुसलमानों और मुशरकीन के मध्य प्रथम लड़ाई में अन्सार शामिल हों बल्कि आपने यह पसंद फ़रमाया कि आपके चचा की औलाद और आपकी क़ौम के ज़रीया से यह शौकत ज़ाहिर हो। अत: आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अन्सार को हुक्म दिया तो वे अपनी सफ़ों में वापस आ गए और आपने उन के लिए कलिमा ख़ैर फ़रमाया। फिर मुशरिकीन ने कहा मुहम्मद हमारी ओर मुक़ाबले के लिए हमारी क़ौम में से हमारे हमपल्ला लोग भेजो। अत: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे बनू हाशिम उठो अपने हक़ के लिए लड़ो जिसके साथ अल्लाह ने तुम्हारे नबी को मबऊस किया है जबकि वे लोग अपने बातिल के साथ आए कि वे अल्लाह के नूर को बुझा दें। अत: हज़रत हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्लिब रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अली बिनअबु-तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उबई बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और उनकी ओर बढ़े तो उत्बा ने कहा कुछ बोलो ताकि हम तुम्हें पहचान सकें। उन लोगों ने कवच पहने हुए थे जिनकी वजह से चेहरे छिपे हुए थे। हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि मैं हम्ज़ा बिन अब्दुल मुतलिब अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का शेर हूं। इस पर उत्बा ने कहा अच्छा मुकाबले पर है और मैं हलीफ़ों का शेर हूँ। तेरे साथ ये दो कौन हैं। हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा अली बिन अबू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु और उबैदा बिन हारिस। उत्बा ने कहा दोनों अच्छे मुकाबले पर हैं। फिर उसने अर्थात उत्बा ने अपने बेटे से कहा कि हे वलीद उठो। अत: हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु उसके मुकाबले पर गए और उन दोनों में तलवार चलने लगी और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे क़तल कर दिया। फिर उत्बा खड़ा हुआ और उसके मुकाबले पर हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु निकले। फिर इन दोनों के मध्य तलवार चली। हज़रत हम्ज़ा ने उसे क़तल कर दिया। फिर शबिबा खड़ा हुआ और इसके मुकाबले पर हज़रत उबैदा बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु निकले जबकि वह (हज़रत अबेदह रज़ियल्लाहु अन्हु उस दिन रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अस्हाब में सबसे ज़्यादा वृद्ध थे। शीबा ने हज़रत अबेदह रज़ियल्लाहु अन्हु की टांग पर तलवार का किनारा मारा जो आपकी पिंडली के गोश्त में लगा और उस को चीर दिया। हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने शीबा पर आक्रमण किया और उसे क़तल कर दिया। (अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद,भाग 2 पृष्ठ 257 जंग बदर, प्रकाशित दारे अहया अत्तुरास अलअरबी बेरूत लबनान 1996 ई)

यह रिवायत दो वर्ष हुए पहले भी वर्णन हुई थी। कुछ हिस्सा में वर्णन करता हूँ। एक और रिवायत है जो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं। इस का वर्णन इस प्रकार मिलता है कि उत्बा बिन रबिया और उसके पीछे उस का बेटा और भाई भी निकले और पुकार कर कहा कि कौन हमारे मुक़ाबला के लिए आता है तो अन्सार के कई नौजवानों ने इसका उत्तर दिया। उत्बा ने पूछा कि तुम कौन हों? उन्होंने बता दिया कि हम अन्सार में से हैं। उत्बा ने कहा कि हमें तुमसे कुछ लेना देना नहीं है। हम तो केवल अपने चाचा के बेटों से जंग का इरादा रखते हैं। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे हम्ज़ा उठो। हे अली रज़ियल्लाहु अन्हु! खड़े हो। हे उबैदा बिन हारिस आगे बढ़ो। हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु तो उत्बा की ओर बढ़े और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं शीबा की ओर बढ़ा और अबेदह रज़ियल्लाहु अन्हु और वलीद के मध्य झड़प हुई और दोनों ने एक दूसरे को सख़्त ज़ख़्मी किया और फिर हम वलीद की ओर मुतवज्जा हुए और उस को मार डाला और उबैदा को हम मैदान जंग से उठा कर ले आए।

(सुनन अब्बू दाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़ी हदीस 2665)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बदर के युद्ध के बारे में वर्णन करते हैं कि इस में कुफ़्फ़ार की संख्या मुसलमानों से बहुत ज़्यादा थी। रात भर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुदा के समक्ष विनयपूर्ण दुआओं और रोने में व्यस्त रहे। जब कुफ़्फ़ार का लश्कर हमारे क़रीब हुआ और हम उनके सामने सफ़-आरा हुए तो नज़र एक व्यक्ति पर पड़ी जो लाल ऊंट पर सवार था और लोगों के मध्य उस की सवारी चल रही थी। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे अली रज़ियल्लाहु अन्हु, हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु जो कुफ़्फ़ार के क़रीब खड़े हैं उन्हें पुकार कर पूछो कि लाल ऊंट वाला कौन है और क्या कह रहा है? फिर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर उन लोगों में से कोई व्यक्ति उन्हें ख़ैर तथा भलाई की नसीहत कर सकता है तो वह लाल ऊंट वाला व्यक्ति है। इतनी देर में हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु भी आ गए। उन्होंने आकर बताया कि वह उत्बा बिन रबी है जो कुफ़्फ़ार को जंग से मना कर रहा है जिसके उत्तर में अबु जहल ने उसे कहा कि तुम बुज़दिल हो और लड़ाई से डरते हो। उत्बा ने जोश में

आकर कहा कि आज देखते हैं कि बुज़दिल कौन है।

(मस्नद अहमद, भाग 1 पृष्ठ 338-339 हदीस 948 मस्नद अली बिन अबी तालिब, प्रकाशित अलेमुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1998 ई)

बहरहाल फिर वह जंग में शामिल हुआ।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बदर के युद्ध के समय पर मेरे और हज़रत अबुबकर रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में फ़रमाया तुम दोनों में से एक के दाएं जानिब हज़रत जिबरईल हैं और दूसरे के दाएं जानिब हज़रत मीकाइल हैं और हज़रत इस्राफ़ील अज़ीम फ़रिश्ता है जो लड़ाई के समय हाज़िर होता है और सफ़ में होता है।

(अल्मुस्तद्रिक अस्सहीहैन,भाग 3 पृष्ठ 345 किताब मआरिफ़ अलसहाब, हदीस नम्बर 4711 प्रकाशित दारुल फ़िक्र लबनान 2002 ई)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब जंग बदर का वर्णन करते हुए इस प्रकार लिखते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मुझे लड़ते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़्याल आता था तो मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साएबान की ओर भाग जाता था लेकिन जब भी मैं गया मैं ने आप अलैहिस्सलाम को सिज्दा में गिड़गिड़ाते हुए पाया और मैंने सुना कि आप अलैहिस्सलाम की ज़बान पर यह शब्द जारी थे कि

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ۔ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ۔

हे ख़ुदा मेरे ज़िन्दा ख़ुदा, हे मेरे ख़ुदा ज़िन्दगी बख़श आक़ा। हज़रत अबु-बकर रज़ियल्लाहु अन्हु आप की इस हालत को देख कर बेचैन हुए जाते थे और कभी कभी बेसाख़ता अर्ज़ करते थे या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे माँ बाप आप पर फ़िदा हों। आप घबराएँ नहीं। अल्लाह अपने वादे ज़रूर पूरे करेगा। परन्तु इस के अतिरिक्त आप का बराबर दुआ किए जाना, आप दुआ में व्यस्त थे और इस ख़ौफ़ में थे कि अल्लाह तआला के वादे भी कई बार शर्त वाले होते हैं।

(उद्धरित लेखक सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु, पृष्ठ 361)

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से शादी 2 हिज्री में हुई। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह का निवेदन किया जिसे हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुशी से स्वीकार फ़रमाया। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि हज़रत अबु बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और फिर हज़रत उमर दोनों ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में आकर हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हु से शादी का निवेदन किया लेकिन रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ामोश रहे और उन्हें कोई उत्तर नहीं दिया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि आप हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हु की शादी मुझ से करेंगे? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या तुम्हारे निकट मेहर के लिए कुछ है? मैंने अर्ज़ किया कि मेरा घोड़ा और मेरी ढाल है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: घोड़ा तो तुम्हारे लिए ज़रूरी है अलबत्ता अपनी ढाल को बेच दो। इसलिए मैंने अपनी बहस को चार-सौ अस्सी दिरहम में बेच कर हक़ मेहर की रक़म का प्रबन्ध किया। लोग यह कहते हैं कि हक़ मेहर रख लो तो जो होगा देखी जाएगी, दे देंगे। लेकिन एक रिवायत में है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हक़ महर के लिए पहले प्रबन्ध करो। इस का अर्थ यह फ़ौरी हक़ है। यह नहीं है जब कि कई लोग मुझे लिख देते हैं कि औरतें हक़ महर की पहले मांग कर लेती हैं हालाँकि हम हंसी ख़ुशी रह रहे हैं। मांग कर देती हैं तो यह उनका हक़ है। यह तो उसी समय देना चाहिए और इस के न देने से फिर झगड़े शुरू हो जाते हैं। और फिर तलाक़ ख़ुला के समय तो यह अदा होना चाहिए हालाँकि इस अर्थात हक़ मेहर का तलाक़ और ख़ुला से कोई सम्बन्ध नहीं है।

बहरहाल एक रिवायत में यह है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह बहस हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को बेची। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने ढाल की क़ीमत भी अदा कर दी और ढाल भी वापस कर दी। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं वह रक़म लेकर आया और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की गोद में रख दी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस में से मुट्ठी भर बिलाल को देते हुए फ़रमाया : इससे कुछ ख़ुशबु ख़रीद लाओं और कुछ लोगों को ईरशाद फ़रमाया कि हज़रत फ़ातिमा का दहेज़ तैयार करो। इसलिए हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हु के लए एक चारपाई, चमड़े का एक तकिया जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी यह सब तैयार किया गया। एक रिवायत में है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से यह रिश्ता करते हुए आप ने फ़रमाया : मेरे रब ने मुझे ऐसा करने का हुक्म फ़रमाया है।

विदाई के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया। जब फ़ातिमा तुम्हारे निकट आएं तो जब तक मैं न आऊँ कोई बात न करना। इसलिए हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उम्मे एमन रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ आईं और घर के एक हिस्सा में बैठ गईं। मैं भी एक ओर बैठ गया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पधारे और फ़रमाया क्या मेरा भाई यहां है। उम्मे एमन ने कहा कि आप का भाई? और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी बेटी की शादी इस से की है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ। क्योंकि ऐसे रिश्ते में शादी हो सकती है। बहरहाल वह सगा भाई नहीं है। आप अन्दर पधारे और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा मेरे निकट पानी लाओ। वह उठीं और घर में रखे हुए एक प्याले में पानी लाएं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे लिया और इस में कली की फिर हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया कि आगे बढ़ो वह आगे हुए। आपने उन पर और उनके सिर पर कुछ पानी छिड़का और दुआ देते हुए कहा।

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اُعِیْذُھَا بِکَ وَذُرِّیَّتَھَا مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ

हे अल्लाह! इस को और इस की औलाद को शैतान मर्दूद से तेरी पनाह में देता हूँ। फिर आप ने फ़रमाया दूसरी ओर रुख करो। जब उन्होंने दूसरी ओर रुख किया तो आपने उनके कंधों के मध्य पानी छिड़का। फिर ऐसा ही हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ किया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया अपने अहल के निकट जाओ अल्लाह के नाम और बरकत के साथ।

इसी प्रकार हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से एक रिवायत इस प्रकार मर्वी है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक बर्तन में वुज़ू किया। फिर उस पानी को हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा पर छिड़का फ़रमाया:

اَللّٰھُمَّ بَارِکْ فِیْھِمَا وَبَارِکْ لَھُمَا فِیْ شَمْلِھِمَا۔

हे अल्लाह इन दोनों में बरकत रख दे और इन दोनों के सम्बन्ध में बरकत रख दे।

हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत उम्मे सलमा ने वर्णन फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें ईरशाद फ़रमाया कि हम फ़ातिमा को तैयार करें। यहां तक कि हम उन को हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के निकट ले जाएं। इसलिए हम घर की ओर मुतवज्जा हुए। हम ने उस को बुतहा के आसपास की नरम मिट्टी से लेपा। फिर खजूर के रेशों से दो तकिए भरे। हमने उस को अपने हाथों से धुना। फिर हमने खजूर और मुनक्का खाने के लिए और मीठा पानी पीने के लिए रखा और एक लकड़ी ली और इस को कमरे में एक ओर लगा दिया ताकि इस पर कपड़े इत्यादि लटकाए जा सकें और इस पर मश्कीज़ा लटकाया जाए। अर्थात कपड़े लटकाने के लिए और मश्कीज़ा लटकाने के लिए वह लक्कड़ी खड़ी की। हमने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हु की शादी से अच्छी कोई शादी नहीं देखी। दअवत वलीमा खजूर, जो, पनीर और हेस्पर मुश्तमिल था। हेय्स उस खाने को कहते हैं जो खजूर और घी और पनीर इत्यादि से मिला के बनाया जाता है। हज़रत अस्मा बिन्त उमेस वर्णन करती हैं कि इस ज़माना में इस दअवत वलीमा से बेहतर कोई वलीमा नहीं हुआ।

(शरह अल्लामा ज़रक़ानी अली अल्मुवाहिबूल दीनिया, भाग 2 पृष्ठ 357 से 367 ज़िक्र तज़वीज अली बफ़ातिमा दारुल क़ुतुब अल्इलमिया बेरूत1996ए-) (सुंन इब्ने माजा, किताब अल्निकाह बाब अलवलीम, हदीस नम्बर 1911)(तारीख़ अलख़मीस, भाग 2 पृष्ठ 77 फ़ी अल्वकाअ मिन अव्वल हिजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अली वफ़ाता दारुल क़ुतुब अल्इलमिया बेरूत 2009 ई)(तबक़ात अल् कुबरा, भाग 8 पृष्ठ 19 दारुल क़ुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990ई)(लुग़ातुल हदीस,भाग 1 पृष्ठ 172 किताबुल्लाह)

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की शादी का विस्तार से वर्णन करते हुए सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में इस प्रकार लिखा है कि हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस औलाद में सबसे छोटी थीं जो हज़रत खतीजा के गर्भ से पैदा हुई और आप अपनी औलाद में सबसे अधिक हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की प्रिय थी। और अपनी व्यक्तिगत गुणों के कारण से वही इस विशेष मुहब्बत की सबसे

आधिक पात्र भी थीं। अब उनकी उम्र लगभग 15 वर्ष की थी और शादी के पैग़ामात आने शुरू हो गए थे। सबसे पहले हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के लिए हज़रत अबु बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने निवेदन किया परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उज्र कर दिया। फिर हज़रत उमर ने निवेदन किया परन्तु उनका निवेदन भी स्वीकार नहीं हुआ। इस के बाद इन दोनों बुज़ुर्गों ने यह समझ कर कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरादा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के सम्बन्ध में मालूम होता है हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से तहरीक की कि तुम फ़ातिमा के सम्बन्ध में निवेदन कर दो। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो शायद पहले से इच्छा रखते थे परन्तु शर्म के कारण ख़ामोश थे तुरन्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हो कर निवेदन पेश कर दिया। दूसरी ओर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ुदा तआला की वह्यी के द्वारा यह इशारा हो चुका था कि हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हु की शादी हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से होनी चाहिए। इसलिए हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने निवेदन पेश किया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझे तो इस के सम्बन्ध में पहले से ख़ुदाई इशारा हो चुका है। फिर आपने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा तो वह शर्म के कारण के ख़ामोश रही। यह भी एक प्रकार का इज़हार रज़ामंदी थी। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुहाजिरीन और अन्सार की एक जमाअत को जमा करके हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और फ़ातिमा का निकाह 2 हिज्री के आरम्भ या मध्य में किया। इसके बाद जब जंगे बदर हो चुकी तो शायद ज़ुल्हज्जा 2 हिज्री के महीना में विदाई हुई और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो को बुला कर फ़रमाया कि तुम्हारे पास मेहर की अदायगी के लिए कुछ है या नहीं?

यह बाग़ वाली घटना जो पिछली बार वर्णन हुई थी इस शादी के घटना से पहले की है। यह मैंने सही कहा था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बुला कर फ़रमाया कि तुम्हारे निकट महर की अदायगी के लिए कुछ है या नहीं? हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह मेरे पास तो कुछ नहीं। आपने फ़रमाया वह ढाल क्या हुई जो मैंने उस दिन अर्थात बदर के सामानों में से तुम्हें दी थी? हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने निवदेन किया वह तो है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बस वही ले आओ। इसलिए यह ज़िरह चार सौ अस्सी दिरहम में बेच दी गई और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसी रक़म में से शादी के खर्चे पूरे किए। जो दहेज आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को दिया वह एक बेल वाली चादर, एक चमड़े का गदेला जिसके अंदर खजूर के ख़ुसंदेह पत्ते भरे हुए थे और एक मशकीज़ा था और एक रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के दहेज में एक चक्की भी दी थी। जब ये सामान हो चुका तो मकान की फ़िक्र हुई। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु अब तक शायद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ मस्जिद के किसी कमरे इत्यादि में रहते थे परन्तु शादी के बाद यह ज़रूरी था कि कोई अलग मकान हो जिसमें पति पत्नी रह सकें। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो से ईरशाद फ़रमाया कि अब तुम कोई मकान तलाश करो जिसमें तुम दोनों रह सको। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने अस्थायी तौर पर एक मकान का प्रबन्ध किया और इस में हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की विदाई हो गई। इसी दिन विदाई के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके मकान पर तशरीफ़ ले गए और थोड़ा सा पानी मंगवा कर उस पर दुआ की और फिर वह पानी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु हर दो पर यह शब्द फ़रमाते हुए छिड़का कि

اَللّٰھُمَّ بَارِکْ فِیْھِمَا وَبَارِکْ عَلَیْھِمَا وَبَارِکْ لَھُمَا نَسْلَھُمَا

अर्थात हे मेरे अल्लाह! तू इन दोनों के आपसी सम्बन्ध में बरकत दे और उन के इन सम्बन्ध में बरकत दे जो दूसरे लोगों के साथ स्थापित हो और उनकी नसल में बरकत दे और फिर आप इस नए जोड़े को अकेला छोड़कर वापस तशरीफ़ ले आए। इसके बाद जो एक दिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर तशरीफ़ ले गए तो हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि हारिस बिन नुअमान अन्सारी के निकट चंद एक मकान हैं आप उनसे फरमाएं कि वह अपना कोई मकान ख़ाली कर दें। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह हमारे लिए इतने मकान पहले ही ख़ाली कर चुके हैं अब मुझे तो उन्हें कहते हुए शर्म आती है। हारिसा को किसी प्रकार इस का ज्ञान हुआ तो वह भागे हुए आए और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ! मेरा जो कुछ है वह हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का है और ख़ुदा की कसम जो चीज़ आप मुझ से स्वीकार फ़र्मा लेते हैं वह मुझे ज़्यादा ख़ुशी पहुंचाती है इस बात की तुलना से कि इस चीज़ के जो मेरे निकट रहती है और फिर उस मुख़लिस सहाबी ने ज़ोर दे कर अपना एक मकान ख़ाली करवा के पेश कर दिया और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा वहां आ गए।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद पृष्ठ 455-456)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी तंगदस्ती और ग़रीबी के अतिरिक्त संयम और क़नाअत का आचरण दिखाया करते थे। इसलिए हदीसों में वर्णन है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन फ़रमाया कि हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हु ने चक्की चलाने से अपने हाथ में तकलीफ़ की शिकायत की और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निकट कुछ क़ैदी आए तो वह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ओर गईं और आप अलैहिस्सलाम को न पाया। आप अर्थात हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा, हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा से मिलें और उनको बताया कि किस प्रकार मैं आई थी। जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पधारे तो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के आने का बताया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे पास आए जबकि हम अपने बिस्तरों पर लेट चुके थे। हम खड़े होने लगे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अपनी जगहों पर ठहरे रहो। फिर आप हमारे मध्य बैठ गए यहां तक कि मैंने आप के क़दमों की ठंडक अपने सीने पर महसूस की। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या मैं तुम दोनों को इस से बेहतर बात न बताऊं जो तुमने मांगा है वह यह है कि जब तुम दोनों अपने बिस्तरों पर लेटो तो चौंतीस बार अल्लाहो अकबर कहो, तैंतीस बार सुब्हान अल्लाह कहो और तैंतीस बार अलहम्दो लिल्लाह कहो। यह तुम दोनों के लिए नौकर से अधिक बेहतर है।

हज़रत अबु हुरैराह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हु नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में आप से नोकर मांगने के लिए हाज़िर हुईं और काम की शिकायत की तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम इस नोकर को हमारे निकट नहीं पाओगी अर्थात इस प्रकार तुम्हें मुझ से नौकर नहीं मिलेगा। आप नहीं देना चाहते थे। हालाँकि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का भी माल ग़नीमत में से हक़ बनता था लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नहीं दिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या मैं तुझे ऐसी बात न बताऊं जो तेरे लिए नौकर से बेहतर है? तुम अपने बिस्तर पर जाते हुए तैंतीस बार सुब्हानल्लाह कहो, तैंतीस बार अल्हम्दुलिल्ला कहो और चौंतीस बार अल्लाहु-अकबर कहो। ये सही मुस्लिम की रिवायत है।

(सही मुस्लिम, किताब अल्ज़िकर व्द्दुआ वत्तौबा,बाब तस्बीह अव्वल अनिहर व इन्दा नौम, हदीस नम्बर 6915-6918)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत वर्णन फ़रमाते हुए इस घटना को बुख़ारी के हवाला से इस प्रकार वर्णन फ़रमाते हैं। हदीस यह है कि हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने शिकायत की कि चक्की पीसने से उन्हें तकलीफ़ होती है। इसी अर्से में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निकट कुछ ग़ुलाम आए। आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निकट तशरीफ़ ले गईं लेकिन आप अलैहिस्सलाम को घर पर न पाया इसलिए हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को अपने आने के कारण से

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

सूचना देकर घर लौट आईं। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम घर पधारे तो हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने जनाब सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के आने की सूचना दी जिस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे निकट पधारे और हम अपने बिस्तरों पर लेट चुके थे। मैंने आप अलैहिस्सलाम को आते देखकर चाहा कि उठूँ परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अपने स्थान पर लेटे रहो। फिर हम दोनों के मध्य आकर बैठ गए यहां तक कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़दमों की ठंडक मेरे सीने पर महसूस होने लगी। जब आप बैठ गए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें कोई ऐसी बात न बताऊं जो उस चीज़ से जिसका तुमने सवाल किया है बेहतर है और वह यह है कि जब तुम अपने बिस्तरों पर लेट जाओ तो चौंतीस बार तकबीर कहो, तैंतीस बार सुब्हानल्लाह कहो और तैंतीस बार अल्हम्दु लिल्लाह कहो। अत: यह तुम्हारे लिए नौकर से अच्छा होगा। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि इस घटना से मालूम होता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम माल के बांटने में ऐसे सावधान थे कि उस के अतिरिक्त कि हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को एक नौकर की ज़रूरत थी और चक्की पीसने से आप के हाथों को तकलीफ़ होती थी परन्तु फिर भी आप ने उनको नौकर न दिया बल्कि दुआ की तहरीक की और अल्लाह तआला की ओर ही ध्यान दिलाया। आप आगर चाहते तो हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को नौकर दे सकते थे क्योंकि जो माल बांटने के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आते थे वे भी सहाबा में बांटने के लिए आते थे और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का भी उनमें हक़ हो सकता था और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा भी इस की हक़दार थीं लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सावधानी से काम लिया और न चाहा कि इन मानों से अपने प्रिय और रिश्तेदारों को दे दें क्योंकि संभव था कि इस से आगे लोग कुछ का कुछ नतीजा निकालते और बादशाह अपने लिए लोगो की सम्पति को जायज़ समझ लेते। अत: सावधानी के तौर पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को उन ग़ुलामों और लौंडियों में से जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निकट उस समय बांटने के लिए आईं कोई न दिया। इस स्थान पर यह भी याद रखना चाहिए कि इन अम्वाल में आप का और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के रिश्तेदारों का ख़ुदा तआला ने हिस्सा निर्धारित फ़रमाया है उनसे आप ख़र्च फ़र्मा लेते थे और अपने रिश्तेदारों को भी देते थे। हाँ जब तक कोई चीज़ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हिस्सा में न आए उसे कभी भी ख़र्च न फ़रमाते और अपने अज़ीज़ से अज़ीज़ रिश्तेदारों को भी न देते। क्या दुनिया किसी बादशाह की सम्बन्ध में यह वर्णन कर सकती है जो बैतुल माल का ऐसा निगरान हो। अगर कोई उदाहरण मिल सकता है तो केवल उसी पवित्र वजूद के ख़ुद्दाम में से अन्यथा दूसरे धर्म इस का उदाहरण प्रस्तुत नहीं कर सकते।

(उद्धरित सीरतुन्नबी, अन्वारुल ऊलूम भाग 1 पृष्ठ 544-545)

हज़रत अली बिन अब्बू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक रात उनके और अपनी बेटी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आए और फ़रमाया क्या तुम दोनों नमाज़ नहीं पढ़ते तो मैंने निवेदन किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारी जानें अल्लाह के हाथ में हैं। जब वह चाहे हमें उठाए तो हमें उठाता है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे इस का कोई उत्तर नहीं दिया और वापस तशरीफ़ ले गए। नमाज़ से अभिप्राय तहज्जुद थी अर्थात कि नमाज़ तहज्जुद यदि नहीं पढ़ते, तहज्जुद के समय अगर हमारी आँख नहीं खुलती तो यह अल्लाह की इच्छा है अल्लाह तआला अगर चाहे तो हमें उठा दे और जब उठा देता है तो हम पढ़ लेते हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कोई बहस नहीं की और वापस तशरीफ़ ले गए। फिर मैंने आप अलैहिस्सलाम को सुना जबकि आप वापस जा रहे थे। आप अपनी रान पर हाथ मारते हुए फ़र्मा रहे थे कि

وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا

(सही अल-बुख़ारी, किताब अल् तहज्जुद, बाब तहरीज़ नबी अला क़ियामुल-लैल वल-नवाफ़िल, हदीस नम्बर 1127)

हज़रत मुस्लेह रज़ियल्लाहु अन्हु इस घटना को वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं। "एक बार आप रात अपने दामाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और अपनी बेटी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर गए और फ़रमाया क्या तहज्जुद पढ़ा करते हो? (अर्थात वह नमाज़ जो आधी रात के लगभग उठकर पढ़ी जाती है) हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने निवेदन किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पढ़ने की कोशिश तो करते हैं परन्तु जब ख़ुदा तआला की इच्छा के अधीन किसी समय हमारी आँख बंद रहती है तो फिर तहज्जुद रह जाती है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तहज्जुद पढ़ा करो और उठकर अपने घर की ओर चल पड़े और रास्ता में बार-बार कहते जाते थे।

وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا۔

यह क़ुरआन करीम की एक आयत है जिसके अर्थ यह हैं कि इन्सान प्राय अपनी ग़लती स्वीकार करने से घबराता है और विभिन्न किस्म की दलीलें देकर अपने दोष पर पर्दा डालता है। अभिप्राय यह था कि बजाए इस के कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा यह कहते कि हम से कभी कभी ग़लती भी हो जाती है उन्होंने यह क्यों कहा कि जब ख़ुदा तआला की इच्छा होती है कि हम न जागें तो हम सोए रहते हैं और अपनी ग़लती को अल्लाह तआला की ओर क्यों सम्बन्धित किया।''

(दीबाचा तफ्सीरुल कुरआन, अन्वारुल ऊलूम, भाग 20 पृष्ठ 389-390)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस घटना को अधिक विस्तार से वर्णन फ़रमाते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी एक घटना वर्णन फ़रमाते हैं जिस से प्रमाणित होता है कि एक समय पर जबकि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने आप को ऐसा उत्तर दिया जिस में बहस और मुक़ाबले का तर्ज़ पाया जाता था तो बजाए इसके कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नाराज़ होते या गुस्से का इज़हार करते आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक ऐसा सूक्ष्म तरीक़ा धारण किया कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु शायद अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी दिनों तक उस की मिठास से मज़ा उठाते रहे होंगे और उन्होंने जो आन्नद उठाया होगा वह तो उन्हीं का हक़ था। अब भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस इज़हारे न पसन्दीदगी को मालूम करके हर एक सूक्ष्म दृष्टि पर आश्चर्य हो जाता है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं। बुख़ारी की रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक रात मेरे और फ़ातिमतुज़ुहरा के पास पधारे जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की साहबज़ादी थीं और फ़रमाया कि क्या तुम तहज्जुद की नमाज़ नहीं पढ़ा करते? मैंने उत्तर दिया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ! हमारी जानें तो अल्लाह तआला के क़ब्ज़ा में हैं और जब वह उठाना चाहे उठा देता है। आप इस बात को सुनकर लौट गए और मुझे कुछ नहीं कहा। फिर मैंने आप से सुना और आप पीठ फेर कर खड़े हुए थे और आप अपनी रान पर हाथ मार कर कह रहे थे कि इन्सान तो अक्सर बातों में बहस करने लग पड़ता है। अल्लाह-अल्लाह, किस सूक्ष्म तर्ज़ से हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो को आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने समझाया कि आप को यह उत्तर नहीं देना चाहिए था। कोई और होता तो पहले तो बहस शुरू कर देता कि मेरी पोज़ीशन और रुत्बा को देखो फिर अपने उत्तर को देखो। क्या तुम्हें यह हक़ पहुंचता था कि इस प्रकार मेरी बात को रद्द कर दो। यह नहीं तो कम से कम बहस शुरू कर देता कि यह तुम्हारा दावा ग़लत है कि इन्सान मजबूर है और उस के समस्त कर्म अल्लाह तआला के क़ब्ज़ा में हैं। वह जिस प्रकार चाहे करवाता है। चाहे नमाज़ की तौफ़ीक़ दे चाहे न दे। और कहता कि जबर का मसला क़ुरआन शरीफ़ के ख़िलाफ़ है। लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन दोनों तरीक़ों से कोई भी धारण न किया और न तो उन पर नाराज़ हुए, न बहस करके हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को उनके कथन की ग़लती पर सूचित किया बल्कि एक ओर हो कर उनके इस उत्तर पर इस प्रकार आश्चर्य का इज़हार कर दिया कि इन्सान भी अजीब है कि हर बात में कोई न कोई पहलू अपने अनुसार निकाल ही लेता है और बहस शुरू कर देता है। वास्तव में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इतना कह देना ऐसे ऐसे लाभ अपने अंदर रखता था कि जिसका छोटा सा हिस्सा भी किसी और की सौ बहसों से नहीं पहुंच सकता था।

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण के उदाहरण प्रस्तुत करो यहां तक कि सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

इस हदीस से हमें बहुत सी बातें मालूम होती हैं जिन से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आचरण के विभिन्न पहलूओं पर रोशनी पड़ती है और इसी स्थान पर उनका वर्णन कर देना उचित मालूम होता है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि प्रथम तो यह मालूम होता है कि आप अलैहिस्सलाम को धर्म का कितना ख़्याल था कि रात के समय फिर कर अपने क़रीबियों का ख़्याल रखते थे। बहुत लोग होते हैं जो ख़ुद तो नेक होते हैं, लोगों को भी नेकी की शिक्षा देते हैं लेकिन उनके घर की हालत ख़राब होती है और उनमें यह गुण नहीं होता कि अपने घर के लोगों का भी सुधार करें और इन्हीं लोगों के सम्बन्ध में कहावत प्रसिद्ध है कि चिराग़ तले अंधेरा। अर्थात जिस प्रकार चिराग़ अपने आसपास समस्त वस्तुओं को रोशन कर देता है लेकिन ख़ुद उस के नीचे अंधेरा होता है इसी प्रकार ये लोग भी दूसरों को तो नसीहत करते फिरते हैं परन्तु अपने घर की फ़िक्र नहीं करते कि हमारी रोशनी से हमारे अपने घर के लोग क्या लाभ उठा रहे हैं। परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस बात का ख़्याल मालूम होता है कि उनके अज़ीज़ भी इस नूर से प्रकाशित हों जिस से वह दुनिया को रोशन करना चाहते थे और इस का आप वादा भी करते थे और उनकी परीक्षा और अनुभव में लगे रहते थे और अपने परिजनों की तरबियत एक ऐसा उत्तम स्थान की प्रतिभा है जो अगर आप में न होती तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आचरण में एक क़ीमती चीज़ की कमी रह जाती। दूसरी बात यह मालूम होती है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस शिक्षा पर पूर्ण विश्वास था जो आप दुनिया के सामने पेश करते थे और एक मिनट के लिए भी आप इस पर संदेह नहीं करते थे और जैसा कि लोग एतराज़ करते हैं कि नऊज़ बिल्लाह दुनिया को उल्लू बनाने के लिए और अपनी हुकूमत जमाने के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ये सब कारख़ाना बनाया था अन्यथा आप अलैहिस्सलाम को कोई वह्यी नहीं आती थी। यह बात न थी बल्कि आप अलैहिस्सलाम को अपने रसूल और ख़ुदा के मामूर होने पर ऐसा पूर्ण विश्वास था जिसका उदाहरण दुनिया में नहीं मिलती क्योंकि संभव है कि लोगों में आप बनावट से काम लेकर अपनी सच्चाई को साबित करते हों लेकिन यह ख़्याल नहीं किया जा सकता कि रात के समय एक व्यक्ति खासतौर पर अपनी बेटी और दामाद के पास जाए और उनसे पूछे कि क्या वे इस इबादत को भी करते हैं जो उसने फ़र्ज़ नहीं की बल्कि उस का अदा करना मोमिनों के अपने हालात पर छोड़ दिया है और जो आधी रात के समय उठकर अदा की जाती है। उस समय आपका जाना और अपनी बेटी और दामाद को नसीहत करना कि वे तहज्जुद भी अदा किया करें इस पूर्ण विश्वास पर आधारित है जो आप अलैहिस्सलाम को इस शिक्षा पर था जिस पर आप लोगों को चलाना चाहते थे। अन्यथा एक झूठा इन्सान जो जानता हो कि एक शिक्षा पर चलना या न चलना एक जैसा है, अपनी औलाद को ऐसे छुपे हुए समय में इस शिक्षा पर अनुकरण करने की नसीहत नहीं कर सकता अर्थात शिक्षा पर चलना निसन्देह एक बात है लेकिन वह नसीहत एकान्त समय में तो नहीं कर सकता। यह उसी समय हो सकती है जब एक आदमी के दिल में विश्वास हो कि इस शिक्षा पर चले बिना पूर्णता प्राप्त नहीं हो सकती। अर्थात कि शिक्षा पर चलना या न चलना यह एक जैसा है लेकिन नसीहत करना, रात के समय, पोशीदा समय में नसीहत करना यह उसी समय हो सकता है जब विश्वास हो कि जो शिक्षा है इस पर चले बिना इन्सान उस के धर्म के या उस शिक्षा के जो उच्च कमाल हैं उन तक नहीं पहुंच सकता। तीसरी बात वही है जिसके साबित करने के लिए मैंने यह घटना वर्णन की है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हर एक बात के समझाने के लिए संयम से काम लिया करते थे और बजाए लड़ने के मुहब्बत और प्यार से किसी को उसकी ग़लती पर अवगत फ़रमाते थे। इसलिए इस अवसर पर जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सवाल को इस प्रकार रद्द करना चाहा कि जब हम सो जाएं तो हमारा क्या इख़तियार है कि हम जागें क्योंकि सोया हुआ इन्सान अपने आप पर क़ाबू नहीं रखता। जब वह सो गया तो अब उसे क्या ख़बर है कि अमुक समय आ गया है अब मैं अमुक अमुक काम कर लूं। अल्लाह तआला आँख खोल दे तो नमाज़ अदा कर लेते हैं अन्यथा मजबूरी होती है क्योंकि उस समय अलार्म की घड़ियाँ न थीं। इस बात को सुनकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आश्चर्य होना ही थी क्योंकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दिल में जो ईमान था वह कभी आपको ऐसा ग़ाफ़िल नहीं होने देता था कि तहज्जुद का समय गुज़र जाए और आपको ख़बर न हो। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दूसरी ओर मुँह कर के केवल यह कह दिया कि इन्सान बात मानता नहीं झगड़ता है। अर्थात तुम को आगे के लिए कोशिश करनी चाहिए थी कि समय नष्ट न हो न कि इस प्रकार टालना चाहिए था। इसलिए हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं। मैंने फिर कभी तहज्जुद में सुस्ती नहीं की।

(उद्धरित सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, अन्वारुल ऊलूम , भाग 1 पृष्ठ 588 ता590)

यह वर्णन अभी चल रहा है। आगे भी होगा इंशा अल्लाह तआला।

आजकल जो पाकिस्तान में हालात हैं ज़्यादा सख़्त होते चले जा रहे हैं। कई हुकूमती अफ़सर जो हैं मौलवी के पीछे चल के और उनके साथ गठजोड़ कर के हमें जिस सीमा तक नुक़्सान पहुंचा सकते हैं पहुंचाने की कोशिश कर रहे हैं। इसलिए खासतौर पर दुआएं करें और रब्वाह के अहमदी भी पाकिस्तान में रहने वाले, दूसरे शहरों में बसने वाले अहमदी भी हर स्थान पर अल्लाह तआला उनको अपनी हिफ़ाज़त में रखे और उनकी बुराई से महफ़ूज़ रखे और उनकी योजनाएं जो निहायत भयानक योजनाएं और ख़तरनाक योजनाएं हैं उनसे बचा के रखे और उन लोगों की अब पकड़ के शीघ्र सामान फ़रमाए।

मैं जुम्आ के बाद कई जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा। उनके बारे में कुछ संक्षेप में वर्णन कर देता हूँ। पहला वर्णन आदरणीया कमांडर चौधरी मुहम्मद असलम साहिब का है जो कैनेडा के थे। 2 नवम्बर 2020 ई को वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलैहि राजेऊन।

कमांडर साहिब 1929 ई में गुजरांवाला में पैदा हुए थे। गुजरांवाला से उन्होंने मैट्रिक किया और प्रथम स्थान प्राप्त किया। फिर तालीमुल इस्लाम कॉलेज और गर्वनमैंट एफ़ सी कॉलेज से एफ़ एस सी की। गर्वनमैंट कॉलेज लाहौर से बी एस सी किया। पंजाब यूनीवर्सिटी में डाक्टर अब्दुस्सलाम साहिब की सरपरस्ती में फिज़िक्स में ऐम एस सी करने की तौफ़ीक़ पाई। 1948 ई में फुर्क़ान फ़ोर्स में भर्ती हो कर आज़ाद कश्मीर में निर्धारित हुए जहां उन्हें मुजाहिद कश्मीर के सर्टीफ़िकेट और आज़ादी कश्मीर के तमग़ा से नवाज़ा गया।

1955 ई में मरहूम पाकिस्तान नेवी में भर्ती हुए जहां उन्हें पाकिस्तान नेवल अकेडमी में बतौर डायरेक्टर आफ़ स्टडीज़, कोहाट में डिप्टी प्रैज़ीडैंट आफ़ इंटर सर्विसिज़ स्लैक्शन बोर्ड, नेवल हेडक्वार्टर इस्लामाबाद में बतौर डिप्टी डायरेक्टर नेवल एजूकेशनल सर्विसिज़ इत्यादि बड़े पदों पर सेवा की तौफ़ीक़ मिली। मरहूम को एजूकेशनल सेक्टर में नेवी के नए स्कूल और कॉलेज खोलने की योजना बनाने का भी और इसी तरह बेहरीया यूनीवर्सिटी की स्थापना में भी बुनियादी किरदार अदा करने की तौफ़ीक़ मिली।

पाकिस्तान नेवी से रिटायर्ड होने के बाद कैनेडा तशरीफ़ ले गए और एक वर्ष मिशन हाऊस टोरंटो में वक़्फ़े आरज़ी किया। इस बाद 1993 ई में वक़्फ़ का रिटायरमैंट के बाद निवेदन किया जिसे हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-राबे ने स्वीकार फ़रमाया और उनकी जो जमाअत की सेवाएं हैं यह भी 28 वर्षों पर आधारित हैं। इस दौरान मरहूम को बतौर सेक्रेटरी जायदाद, सेक्रेटरी रिश्ता नाता, ऐडीशनल सेक्रेटरी मिशन हाऊस और मुआविन होम्योपैथी क्लीनिक इत्यादि की सेवा की तौफ़ीक़ मिली। मरहूम निहायत विनम्र स्वभाव, नरम वार्तालाप करते थे। हर किसी से प्रेम से पेश आते थे। नमाज़ों की पाबन्दी करने वाले। ख़िलाफ़त के साथ अत्यधिक सम्बन्ध और इश्क़ रखने वाले। ज़िन्दगी वक़्फ़ करने के बाद अपना हर क्षण जमाअत की सेवा में गुज़ारने की भरपूर कोशिश करते। पिछले कुछ अर्से से बहुत बीमार थे फिर भी जब भी तबीयत सँभलती तुरन्त मिशन हाऊस आ जाते और अंतिम क्षण तक धर्म की सेवा में सरगर्म कार्य करते रहे। पीछे रहने वालों में उनकी पत्नी और तीन बेटे हैं। अल्लाह तआला मरहूम से क्षमा और रहम का व्यवहार फ़रमाए और उनकी नेकियां उनकी औलाद में जारी फ़रमाए।

उनकी बहू नुसरत जहां कहती हैं कि निहायत शफ़ीक़, रहम-दिल और नेक इन्सान थे। निहायत ईमानदारी से वक़्फ़ को निभाया। एक आईडीयल पति थे और बाप थे। वफ़ात से पहले तक अपने बच्चों को नसीहत करते रहे कि जमाअत और ख़ुदा से सम्बन्ध और नमाज़ों में बाक़ायदगी बहुत ज़रूरी है और सारी उम्र स्वयं भी तहज्जुद और नमाज़ों को बाक़ायदगी से अदा किया।

दूसरा जनाज़ा आदरणीया शाहीना क़मर साहिबा पत्नी क़मर अहमद शफ़ीक़ साहिब जो नज़ारत उलिया के ड्राईवर हैं। उनका है यह शाहीना क़मर साहिबा और उनके बेटे प्रिय समर क़मर 12 नवम्बर 2020 ई को दोपहर सवा एक बजे एक रोड ऐक्सिडन्ट में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलैहि राजेऊन।

वफ़ात के समय श्रीमती की उम्र 38 वर्ष थी और प्रिय समर अहमद क़मर की उम्र 17 वर्ष थी। शाहीना क़मर साहिबा ने अपने पति और दो बेटियों और एक बेटे के अतिरिक्त तीन भाई भी पीछे छोड़े हैं। उनकी बेटी शाहीना क़मर कहती हैं कि मेरी माँ बहुत नेक महिला थीं। मुझे हर वक़त नेकियों की नसीहत करती रहतीं। ख़ुद भी हमेशा नेकियों में पहल करती थीं और हर बात मुझ से शेयर करती थीं। मेरी बहुत अच्छी दोस्त थीं और अपनी सारी बातें मुझे बताया करती थीं और दूसरी बात यह विशेष वर्णन की है कि माशा अल्लाह उन्हें जमाअत के कामों से बहुत लगाव था और सेवा को हर वक़त तैयार रहती थीं। उनके पति ने भी लिखा है कि कम शिक्षा प्राप्त करने के अतिरिक्त घर को भी बड़ी अच्छे प्रकार से सँभाला और बच्चों की भी उच्च रूप से तरबियत की।

फिर उनके बेटे प्रिय समर अहमद क़मर इब्ने क़मर अहमद शफ़ीक़ साहिब का वर्णन है उसकी उनकी माता के साथ ही दुर्घटना में वफ़ात हो गई थी। तालीमुल इस्लाम कॉलेज में प्रथम वर्ष का छात्र था और अल्लाह के फ़ज़ल से पढ़ाई में ठीक था। ख़ुद्दाम के साथ डयूटियाँ भी बड़े जोश और भावना से दिया करता था। जमाअत के कामों में बहुत सक्रिय था। जब भी ज़ईम की ओर से बुलावा आता तुरन्त हर काम छोड़ के चले जाना। उनके पिता लिखते हैं कि कई बार तीन-तीन चार-चार दिन के लिए मैं सफ़र पर रहता तो मुझे कहता कि अब आप फ़िक्र न करें मैं घर को सँभाल लूँगा, आप बिना संदेह के आराम से अपनी डयूटी दिया करें। और वास्तव में ऐसा ही था। बहुत जिम्मेदार बच्चा था। समर अहमद क़मर की बड़ी बहन समरीन कहती हैं मेरे भाई माशा अल्लाह बहुत अच्छे थे। ग़ुस्सा तो उन्हें आता ही नहीं था। मैं अगर कभी डाँट भी देती तो बिल्कुल भी ग़ुस्सा नहीं करते थे और न ही नाराज़ होते थे बल्कि बच्चों से और बहन भाईयों से बहुत प्यार का सम्बन्ध था। बाक़ी छोटे बहन भाइयों ने भी यही लिखा है। अल्लाह तआला मरहूम से क्षमा और रहम का व्यवहार फ़रमाए और इस सारी फ़ैमली को, छोटे बच्चों को भी और उन बच्चों के पिता को भी सब्र और हौसला प्रदान फ़रमाए। उनका एक बेटा वफ़ात पा गया और पत्नी भी वफ़ात पा गई।

अगला जनाज़ा श्रीमती सईदा अफ़ज़ल खोखर साहिबा पत्नी मुहम्मद अफ़ज़ल खोखर साहिब शहीद का है जो अशर्फ़ महमूद खोखर साहिब शहीद की माता थीं। उनके पति भी शहीद हुए थे, बेटे भी हुए। 12 सितंबर 2020 ई को कैनेडा में वफ़ात पा गईं। इन्ना लिल्लाह व इन्ना ईलैहि राजेऊन।

मियां और बेटे की शहादत के बाद आपको बहुत कठिन हालात का सामना करना पड़ा लेकिन आप ने हर मुश्किल का बहुत धैर्य और साहस के साथ मुक़ाबला किया। बहुत वक़ार के साथ ज़िन्दगी गुज़ारी। कभी कोई शिकवा ज़बान पर न होता। तीन बच्चियों की शादियों का कर्तव्य अदा किया। कुछ वर्ष पूर्व उन्हें अपने एक और युवा बेटे आसिफ़ महमूद खोखर की अचानक वफ़ात का सदमा बर्दाश्त करना पड़ा। उस समय पर भी बड़े धैर्य से काम लिया और बहुत सब्र का उदाहरण दिखाया। अपने समस्त अज़ीज़ों से प्यार का व्यवहार करने वाली थीं। मेहमान नवाज़ थीं। ग़रीबों का ध्यान रखने वाली थीं। ख़िलाफ़त के साथ अक़ीदत और सम्मान और प्यार का सम्बन्ध था। जमाअत की तहरीकों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेती थीं। सारी ज़िन्दगी अपने माता पिता, शहीद पति और अपने बेटे और ख़ानदान के अन्य बुज़ुर्गों के नाम पर सदक़ा और ख़ैरात करती रहीं। आपके माता पिता श्रीमान मिर्ज़ा फ़ज़ल करीम साहिब और सुग़रा बेगम साहिबा इस्लाम और अहमदियत के शैदाइयों में से थे। आप मुहतरम मिर्ज़ा मुजीब अहमद साहिब और मिर्ज़ा फ़ज़लुर्रहमान साहिब ईस्ट लंडन की सबसे बड़ी बहन थीं। मुबारक खोखर साहिब आफ़ लाहौर की बड़ी भावजा थीं। मुबारक सिद्दीक़ी साहिब की बड़ी ख़ाला थीं। मरहूमा अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसिया थीं। पीछे रहने वालो में एक बेटा श्रीमान बिलाल अहमद खोखर साहिब और तीन बेटियां तय्यबा क़ुरैशी, ताहिरा माजिद और समीना खोखर छोड़ी हैं। अल्लाह तआला मरहूमा के दर्जात बुलंद फ़रमाए। क्षमा और रहम का व्यवहार फ़रमाए और उन बच्चों को भी अपनी माँ की नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

☆ ☆ ☆ ☆

शेष पृष्ठ 9 पर

की नमाज़ पढ़ लेते हैं। नमाज़ें माफ़ नहीं होतीं। पैग़म्बरों को भी माफ़ नहीं हुईं। एक हदीस में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास एक नई जमाअत आई, उन्होंने नमाज़ की माफ़ी चाही। आपने फ़रमाया कि जिस धर्म में कर्म नहीं वह धर्म कुछ नहीं। इस बात को ख़ूब याद रखो। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि अल्लाह तआला के निशानों में से एक यह भी निशान है कि आकाश और धरती उसके आदेश से स्थापित रह सकते हैं। कभी कभी लोग जो तबीआत की तरफ़ झुक जाते हैं कहते हैं कि नेचरी (प्राकृतिक) धर्म अनुकरण योग्य है। सेहत की हिफाज़त के साधनों का प्रयोग न करें तो तक़्वा और पवित्रता का क्या लाभ होगा? अल्लाह तआला के निशानों में से यह भी एक निशान है कि कई दवाइयां बेकार हो जाती हैं और सेहत की हिफाज़त के माध्य काम नहीं आ सकते। न दवा काम आ सकती है और न डाक्टर परन्तु उस का आदेश हो तो उल्टा सीधा हो जाता है।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की परीक्षा

देखो हज़रत इब्राहीम की परीक्षा कि बच्चे और उस की माँ को कनआन से दूर ले जाओ। वह अपने को वहां ले गए जहां अब मक्का स्थित है। ऐसा स्थान जहां न दाना था न पानी वहां पहुंच कर कहा कि हे अल्लाह मैं अपनी नस्ल को ऐसे स्थान पर छोड़ता हूँ जहां दाना पानी नहीं है। हज़रत सारह रज़ि का इरादा था कि किसी तरह से इस्माईल मर जाए। उन्होंने कहा कि इस को ऐसे स्थान पर छोड़। उनको यह बात बुरी मालूम हुई परन्तु ख़ुदा ने कहा कि सारह रज़ि जो कहती है वही करना होगा। इस लिए नहीं कि सारह रज़ि का ध्यान ज़्यादा था। सारह रज़ि ने हाजरह रज़ि को इससे पहले भी निकाला था। फ़रिश्ता उस वक़्त भी बोला था। नबियों के सिवा भी अल्लाह तआला अपने बंदों से कलाम करता है। अत: हाजरह रज़ि से दो बार वार्तालाप हुई। अत: इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ऐसा ही किया। कुछ थोड़ा सा पानी और थोड़ी सी खजूरें लेकर चले गए और छोड़कर आ गए। कुछ दिन बाद न दाना रहा न पानी रहा तो इस्माईल मरने लगे। उस वक़्त माँ ने न चाहा कि मैं उस की मौत देख सकूं। कई बार इधर उधर दौड़ें कि शायद कोई क़ाफ़ला आता हो। दूर जा कर टीले पर चढ़ कर चीख़ने लगीं। अब वह वक़्त था कि एक ही बच्चा था और आप पति से अलग थीं। मानो विधवा ही की तरह थीं। आगे बच्चा पैदा होने की उम्मीद नहीं थी। चीख़ने लगीं। उस वक़्त फ़रिश्ता ने आवाज़ दी कि हाजिरा। हाजिरा। उधर देखा। उधर देखा कोई नज़र न आया। फिर देखा कि बच्चे के इधर उधर पानी जारी हो रहा है मानो मुर्दा ज़िन्दा हुआ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि यदि पानी रोका न जाता तो सारी दुनिया में बह निकलता। इस क़िस्सा के वर्णन से यह अभिप्राय है कि यद्यपि ऐसा स्थान हो जहां दाना-पानी न हो। जभी ख़ुदा तआला अपनी क़ुदरत का करिश्मा दिखाता है अत: पहला करिश्मा यह पानी था। और इस बात की तरफ़ भी इशारा था कि वह पानी जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहिस्सलाम ने फैलाया। इस की शान यह है कि اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا (अल हदीद:18)। इस पानी से तो इस्माईल ज़िन्दा हुआ था और इससे दुनिया ज़िन्दा हुई। मुद्दा यह है कि जहां ज़ाहरी परामर्श न था वहां अल्लाह तआला ने बचाओ की एक राह निकाल दी। और अल्लाह तआला जो यह फ़रमाता है कि इसके आदेश से ज़मीन तथा आसमान रह सकते हैं ,देखो वह जंगल जहां इतनी गर्मी पड़ती है और एक इन्सान न था उस को ख़ुदा ने कैसा बना दिया कि करोड़ों लोग वहां जाते हैं और प्रत्येक स्थान से लोग जाते हैं। वह मैदान जहां हज के लिए लोग जमा होते हैं। वही है जहां न दाना था न पानी।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिरिहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-2)

सयद्दना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का "मस्जिद मन्सूर" आकिन के उद्घाटन के अवसर पर भाषण

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: सय्यद मुहयिद्दीन फ़रीद)

25 मई सोमवार के दिन 2015 ई (शेष.....)

नमाज़ जनाज़ा हाज़िर तथा ग़ायब

नमाज़ों की अदायगी से पूर्व हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने निमंलिखित दो हाज़िर जनाज़े और छ: लोगों के जनाज़ा ग़ायब पढ़ाए।

नमाज़ जनाज़ा हाज़िर

1. आदरणीय क़ाज़ी ताहिर अहमद साहिब (मारबुर्ग,जर्मनी) मरहूम ने ख़ुदा की इच्छा अनुसार तिथि 20 मई 2015 को 63 वर्ष की आयु में वफ़ात पाई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। मरहूम को जर्मनी में 13 वर्ष बतौर नैशनल सेक्रेटरी रिश्ता नाता सेवा की तौफ़ीक़ मिली, सिलसिला के प्रसिद्ध आलिम क़ाज़ी मुहम्मद नज़ीर साहिब लायलपूरी मरहूम के भांजे थे। मरहूम मूसी थे।

2. आदरणीया अज़ीज़ बेग़म साहिबा (पत्नी आदरणीय चौधरी अब्दुल हक़ साहिब, ड्राम शटड, जर्मनी) मरहूमा ने 23 मई 2015 को 77 वर्ष की आयु में वफ़ात पाई । इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। मरहूमा आदरणीय शहबाज़ अहमद साहिब सेक्रेटरी सनअत व तिजारत लोकल इमारत डारम शटड की माता थीं।

जनाज़ा ग़ायब

1. आदरणीया रिज़वाना प्रवीण साहिब (पत्नी आदरणीय नईम अहमद संधू साहिब, प्रेम कोट ज़िला हाफ़िज़ाबाद) मरहूमा ने 9 मार्च 2015 को 42 वर्ष की आयु में वफ़ात पाई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन । मरहूमा को लंबा अरसा बतौर सदर लजना प्रेम कोट सेवा की तौफ़ीक़ मिली। मरहूमा मूसिया थीं।

2. आदरणीया फ़तह ख़ातून साहिबा (पत्नी आदरणीय ख़ुदा यार साहिब मरहूम आफ़ चक 35 शुमाली सरगोधा) मरहूमा ने 23 फरवरी 2015 को वफ़ात पाई। मरहूमा मूसिया थीं। बहुत नरम स्वभाव, हमदर्द , दुआ करने वाली, नेक और मुख़लिस महिला थीं।

3. आदरणीय जमाल दीन साहिब (इब्न आदरणीय ख़ुदा बख़्श साहिब मरहूम कलासवाला तहसील पसरोर ज़िला स्यालकोट मरहूम ने 28 अप्रैल 2015 ई को 88 वर्ष की आयु में वफ़ात पाई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन । मरहूम ईमानदार और सिलसिला का दर्द रखने वाले नेक और मुख़लिस इन्सान थे।

4. आदरणीया साजिदा प्रवीण साहिबा (पत्नी आदरणीय बशारत अहमद साहिब कलासवाला ज़िला स्यालकोट) मरहूमा ने तिथि 12 अप्रैल 2015 को दो वर्ष की बीमारी के बाद 47 वर्ष की आयु में वफ़ात पाई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। मरहूमा को लंबा अरसा सदर लजना कलासवाला ज़िला स्यालकोट की हैसियत से सेवा की तौफ़ीक़ मिली। मरहूमा मूसिया थीं और जमाअती कामों के लिए प्रत्येक समय तैयार रहती थीं।

5. आदरणीय हफ़ीज़ अहमद साहिब (इब्न शफ़ी मुहम्मद साहिब,रब्वाह) मरहूम ने 21/मई 2015 को 66 वर्ष की आयु में वफ़ात पाई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। आप कार्यकर्ता बहिश्ती मक़बरा रब्वाह थे और दारुल रब्वाह में ट्यूबवेल ऑप्रेटर का काम करते रहे।

6. आदरणीया बशीरां बेगम साहिबा (पत्नी आदरणीय चौधरी अब्दुल लतीफ साहिब रूण हाइम ,जर्मनी) मरहूमा ने 7 मई 2015 को जर्मनी में वफ़ात पाई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। आप हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत मियां दीन मोहम्मद साहिब की बेटी और आदरणीय ग़ुलाम मुहम्मद अख़तर साहिब साबिक़ नाज़िर आला सदर अन्जुमन अहमदिया की भतीजी थीं। आपके बेटे आदरणीय शाहिद लतीफ़ अन्जुम साहिब सदर जमाअत रूण हाइम बतौर असिस्टेंट नैशनल सेक्रेटरी ज़याफ़त सेवा अंजाम दे रहे हैं। मरहूमा मूसिया थीं

नमाज़ जनाज़ा की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के हाल में तशरीफ़ ले आए और प्रोग्राम के अनुसार आमीन के समारोह का आयोजन हुआ।

आमीन का आयोजन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने प्रेम पूर्वक निम्नलिखित 24 बच्चों और बच्चियों से क़ुरआन करीम की एक-एक आयत सुनी और अंत में दुआ करवाई।

प्रिय आज़ान महमूद, प्रिय अज़ीम अहमद, शायान अहमद, तफ़रीद अहमद, क़ाहिर अहमद, सफ़वान अहमद जावेद, फ़रीद ज़करीया, ख़ाक़ान रशीद, राना फ़रहान अहमद, प्रिय इब्तिसाम ख़ान, प्रिय ज़ाहिर नदीम भट्टी, एहसन इफ़ज़ाल, इशान अहमद, प्रिय तौकीर अहमद।

प्रिया ताबीर नासिर डोगर, प्रिया मनाल हबीब, प्रिया गुल नताशा ख़ान जावेद, प्रिया सतवत ताहिर, प्रिया अलीन अहमद , प्रिया रिदा हसन, प्रिया अदीबा अहमद, प्रिया फ़रेहा शहज़ाद , प्रिया शाफिया अफ़ज़ल, प्रिया ग़ज़ाला शाद।

आमीन के इस समारोह में एक बच्ची ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में दरख़ास्त की कि प्यारे आक़ा मेरे सिर पर हाथ फेर दें हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने प्रेम पूर्वक बच्ची के सिर पर अपना पवित्र हाथ रखा और यह ख़ुशनसीब बच्ची उन कुछ क्षणों में दुआओं के खज़ाने और बरकतें लिए हुए यहां से विदा हुई।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़ ज़ुहर और असर जमा करके पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए

अख़बार DIE ZEIT को हुज़ूर अनवर का इंटरव्यू

प्रोग्राम के अनुसार साढ़े पाँच बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर पधारे। जर्मनी के एक प्रसिद्ध अख़बार "DIE ZEIT" के ऑनलाइन ऐडीशन के लेखक ताहिर चौधरी साहिब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का इंटरव्यू लेने के लिए आए थे।

ताहिर चौधरी साहिब एक अहमदी नौजवान हैं और यूनिवर्सिटी में पत्रकारिता की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और अख़बार DIE ZEIT से जुड़े हैं और बहुत से सियासतदानों, खिलाड़ियों, समाजी माहिरीन के इंटरव्यू कर चुके हैं।

अख़बार "DIE ZEIT" एक साप्ताहिक अख़बार है जो 1946 ई से प्रत्येक जुमेरात को प्रकाशित होता है। पूर्व चांसलर श्मिटइस अख़बार के प्रकाशक और एक इतालवी लेखक सम्पादक हैं। यह औसतन पाँच लाख की संख्या में बिकता है जब कि इस को पढ़ने वालों की संख्या डेढ़ मिलियन है और ऑनलाइन संस्करण को इंटरनैट पर देखने वाले लोगों की संख्या लगभग पाँच मिलियन है।

लेखक जर्नलिस्ट ताहिर अहमद साहिब ने पहला प्रश्न यह किया कि आजकल इस्लाम की हालत के बारे में आपकी क्या राय है और इस्लाम के पतन के बुनियादी कारण हैं?

इस प्रश्न का जवाब देते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया

इस्लाम के पतन का बुनियादी कारण मालूम करने के लिए हमें इस्लाम के उस आरम्भिक ज़माना में जाना पड़ेगा जब इस्लाम का आरम्भ हुआ और जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तशरीफ लाकर एक बिगड़ी क़ौम को ठीक किया और उनको इन्सान बनाया। जैसा कि हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि उनको जानवरों से इन्सान बनाया ,आचरण वाला इन्सान बनाया फिर ख़ुदा वाला इन्सान बनाया और वह लोग अल्लाह तआला की पहचान करने लग गए जब यह हालत हो गई और यह बदलाव पैदा हो गई तो उस समय आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भविष्यवाणी फ़रमाई कि एक ज़माना आएगा जब ये लोग जिनकी ऐसी आला शिक्षा है उनकी पुन: वही हालत हो जाएगी बल्कि इस से भी

बदतर हालत हो जाएगी और इस समय जहां तक इस्लामी शिक्षा का प्रश्न है जो कुरआन करीम में खुले तौर पर दर्ज है वह तो मौजूद होगी लेकिन इस को समझाने वाले, इस को बताने वाले जो उल्मा हैं वह बिगड़ चुके होंगे। और जब वह ज़माना आए गा तो उस समय एक व्यक्ति आए गा जो फिर इस्लाम को दुबारा संसार में क़ायम करेगा, ईमान को संसार में क़ायम करेगा। और ईमान यदि सुरय्या सितारा पर भी चला गया तो वह वहां से ज़मीन पर ले आएगा

तो आज मुसलमानों की जो यह बिगड़ी हुई हालत है यह तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उस भविष्यवाणी के अनुसार है और इस का ईलाज भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बता दिया था कि वह ज़माना आएगा जब यह हालत होगी तो उस समय मुसलमानों को फिर सुधारने के लिए, उनकी हिदायत के लिए इमाम महदी आए गा तो उस को मान लेना और उस को मेरा सलाम पहुंचाना, इसे क़बूल करके तुम लोगों की हालत सही होगी अन्यथा तुम बिगड़ते चले जाओगे। बिगड़ने की हालत के हवाला से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था : मेरी उम्मत पर भी वह हालात आएँगे जो बनी इस्राईल पर आए थे, जिन में ऐसी समानता होगी जैसे एक पांव के जूते की दूसरे पांव के जूते से होती है। यहां तक कि यदि उनमें से कोई अपनी माँ से व्यभिचार करता होगा तो मेरी उम्मत में से भी कोई ऐसा बद-बख़्त आएगा। "आप इससे गिरावट का अनुमान कर लें कि अख़लाक़ी तौर पर भी और धार्मिक तौर पर भी इतने बिगड़ जाऐंगे, जिसकी कोई इंतिहा नहीं।"

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार उस समय जिसने आना था उसको मान लोगे तो बच जाओगे और आज यही हम देख रहे हैं। केवल जमाअत अहमदिया के अतिरिक्त प्रत्येक फ़िर्क़ा कट्टरवाद की यदि शिक्षा नहीं देता तो अपने व्यवहार से साम्प्रदायिकता का समर्थन और प्रकटन करता है। हम पर अत्याचार भी होता है तो हम उस को बर्दाश्त करते हैं और अत्याचार का बदला बर्दाश्त और दुआ से देते हैं और सब्र से देते हैं, हौसला से देते हैं। अत: ये हालात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार बिगड़े हैं और इसी भविष्यवाणी के अनुसार आने वाला आ गया। तो उसने संसार को बता दिया कि सच्चा इस्लाम क्या है। अब जब तक इस को नहीं मानते ये बिगड़ते जाऐंगे। यही बात मैंने प्रत्येक जगह अपने इंटरव्यूज़ में, अपने ऐडरैसिज़ में बताई है। अमरीका में भी, आयरलैंड में भी, यूके में भी यही मैंने कहा है। यही मेरा संदेश होता है कि ये मुसलमान बिगड़ते जाएंगे उस समय तक नहीं सँभल सकते जब तक ये अल्लाह की ओर से आने वाले को नहीं मानेंगे।

जर्नलिस्ट ने प्रश्न किया कि आप के निकट लोगों की इस्लाम के बारे में सबसे बड़ी ग़लतफ़हमी क्या है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

आप जर्नलिस्ट हैं। आपको पता होना चाहिए, ग़लत फ़हमी क्या है। सबसे बड़ी ग़लत फ़हमी तो मैंने वर्णन कर दी कि जो बिगड़ी हुई शिक्षा ये दे रहे हैं जबकि इस्लाम की यह शिक्षा नहीं है। पिछले दिनों दाइश के लीडर ने यही बयान दिया था, चार पांच दिन पहले ये बयान आया था कि इस्लाम तो जिहाद और कट्टरवादियों का धर्म है और इस में प्यार और मुहब्बत और भाई चारा वाली बात ही कोई नहीं। तो जब ये विचारों पैदा हो जाएं तो फिर यही कुछ होता है जो हो रहा है। सऊदी अरब में देख लें। एक ओर तो यह दावा कि हम अल्लाह तआला के घर के रक्षक हैं। एक ओर यह दावा कि हमारी सरज़मीन पर संसार के सबसे आला अफ़्ज़ा और ख़ातमन्नबिय्यीन का मज़ार है। यहां वह पैदा हुए। यहां वह मदफ़ून हुए। और हम बिना किसी भेदभाव के किसी discrimination के प्रत्येक मुसलमान फ़िर्क़ा को इजाज़त देते हैं कि यहां वह आता है और हज भी करता है और मदीना भी जाता है। बाक़ी सारे जो भी हज के मनासिक (रस्में) हैं वह प्रत्येक को खुले तौर पर करने की इजाज़त है। लेकिन इसके बावजूद जमाअत अहमदिया को हज करने की इजाज़त नहीं है।

जमाअत की बात तो एक ओर रही लेकिन दूसरे जो अपने आपको मुसलमान कहते हैं। जो कलिमा पढ़ते हैं। मुसलमान की प्रशंसा जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाई कि जो ला इलाहा इल्लल्लाहो मुहम्मद रसूलुल्लाह पढ़ता है। जो कलिमा पढ़ता है वह मुसलमान है, बल्कि यह भी रिवायत है जो ला इलाहा इल्लल्लाहो कह दे वह मुसलमान है। तो इन मुसलमानों के साथ जो कलिमा पढ़ते हैं अब जो recent डिवेलपमैंट हुई है वह क्या हो रही है। यमन में जो जंग लड़ी जा रही है वह फ़िर्कावारीयत की जंग है। एक ओर यह दावा कि हम खुली इजाज़त देते हैं और हमारा किसी फ़िर्क़ा से सम्बन्ध नहीं दूसरी ओर फ़िर्कावारीयत की जंग लड़ रहे हैं और फिर यही नहीं दो दिन पहले यहां सऊदी अरब के अंदर शीयों की एक मस्जिद या इमाम बारगाह थी वहां हमला हुआ और 22 आदमी मर गए और काफी सारे ज़ख़्मी भी हुए तो वहां भी यह फ़साद शुरू होगा इस लिए कि ये उन के पैदा किए हैं।

फिर यही लोग जो सलफ़ी हैं, सऊदी अरब की पैदा-वार हैं । इसी तरह शिद्दत पसंद वहाबी हैं। तो ये सारी चीज़ें बताती हैं कि ये लोग और ये जगह जिस को मुस्लमानों के समस्त फ़िरक़े मुक़द्दस समझते हैं और वहां जाते हैं और वहां के बादशाह की इज़्ज़त भी इस लिए करते हैं कि वह वहां के मुतवल्ली हैं। इस के अतिरिक्त ये लोग मुस्लमान फ़िर्क़ों से ये व्यवहार करते हैं और उनके दिलों में जो गंदगी हैं वह अब बाहर निकल रही हैं। जो अपने आपको समझते हैं कि हम इस्लाम के अलमबरदार हैं इस्लाम की इस्लाह कर सकते हैं, वही कट्टरवाद की शिक्षा दे रहे हैं।

अब तो कट्टरवाद की कोई सीमा नहीं रही। प्रत्येक जगह चल रही है और चलती चली जाएगी। और यही इस्लाम पर सबसे बड़ा आरोप है। हम जमाअत अहमदिया, यह कहते हैं कि तुम जमाअत अहमदिया पर जिहादी होने का आरोप लगाते हो या extremist होने का या शिद्दत पसंद होने का और केवल अपने धर्म को सही समझते हो। तो ये सब ग़लत आरोप हैं जो न क़ुरआन-ए-करीम से साबित होते हैं और न अहादीस से साबित होते हैं और न जमाअत के अमल से तुम इन आरोप को साबित कर सकते हो।

फिर जर्नलिस्ट ने प्रश्न किया कि : इस समय संसार में जो conflict देख रहे हैं इस में मुस्लमान एक दूसरे की गर्दनें काट रहे हैं। आप किस को ज़्यादा क़सूरवार ठहराते हैं? मुस्लमानों को या मग़रिबी ताक़तों को जो अपने लाभ के लिए ऐसा कर रही हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : बात यह है कि यदि आप अक़्ल प्रयोग न करें और मेरी ग़लत बातों में आकर अपने भाई की गर्दन उड़ादें तो क़सूरवार जितना incite करने वाला होगा इतना ही आप होंगे, जो पागल हो गए। जो मतलबी कौमें हैं, या वे गिरोह या वे लोग या वे तबक़ा जो इस्लाम को पनपता नहीं देखना चाहते या किसी भी रंग में इस्लाम के विरुद्ध है क्योंकि इस समय अमलन यदि कोई किसी धर्म को मानने वाले इस धर्म पर अमल करना चाहते हैं या उस धर्म पर रहना चाहते हैं या समझते हैं कि यही हमारा धर्म सच्चा है और धर्म ज़रूरी है वह मुस्लमान हैं। ईसाइयत को अधिकतर लोग, 75 प्रतिशत से अधिक धर्म को छोड़ चुके हैं।

एक ज़माना में यह कहा जाता था कि अमरीका में बहुत धार्मिक लोग हैं। अभी हाल में ही जो survey हुआ है इस में बहुत से लोगों ने कहा है कि हमें धर्म में कोई दिलचस्पी नहीं। धर्म को मानने वाले लोग बड़ी तेज़ी से कम हो रहे हैं । जो पहले लगभग 90 प्रतिशत थे दो तीन सालों में 70 प्रतिशत रह गए हैं । तो यह figure बता रहे हैं कि धर्म से दूरी हो रही हैं। वहां इस्राईल में सर्वे हुआ है जो पिछले दिनों अख़बार में आया था। जो यहूदी हैं उनमें से भी बड़ी तेज़ी से ऐसे लोग पैदा हो रहे हैं जो कहते हैं हमें धर्म से कोई दिलचस्पी नहीं और यह percentage तेज़ी से बढ़ रहा है।

मुसलमानों का चूँकि धर्म की तरफ ध्यान है और ये समझते हैं कि हमारा धर्म सही है और धर्म होना चाहिए। इस कारण से जो कौमें धर्म के विरुद्ध हैं वह चाहती हैं कि इस्लाम भी इसी तरह ख़त्म हो जाए जिस तरह बाक़ी धर्म ख़त्म हो चुके हैं लेकिन ऐसा कभी नहीं होगा। इस लिए वह कौमें मुस्लमानों को भड़काती हैं, क़ौमों को और विभिन्न ग्रुपों को भड़काती हैं और ये ग्रुप उनके ही पैदा किए हैं। ये कई जगह मैं पहले भी कह चुका हूँ। पिछले दिनों peace symposium के अवसर पर मैंने यही कहा था कि ISIS जो हैं न उनके पास कोई industry है ,यह न कोई हथियार बना सकते हैं। न उनके पास विज्ञानं के रिसर्च की approach है न इतनी sophisticated चीज़ें उनके पास हो सकती हैं। न उनकी economy इतनी मज़बूत रह सकती है। ISIS की economy किस तरह मज़बूत हो रही है? वह कहते हैं कि छ: मिलियन डालर रोज़ाना उनकी कमाई है और infrastructure के ऊपर या जो स्टाफ़ उन्होंने रखा हुआ है या payment करते हैं, इस का ख़र्च एक मिलियन डालर है बाक़ी पैसे कहा से आ रहे हैं। अब प्रश्न यह है कि पैसे कहाँ से आ रहे हैं।

अब देखें ईरान पर पाबंदीयां लगाते हैं, ईरान जो एक established पुराना देश है इस की economy है उनका एक सिस्टम है एक infrastructure है, संसार के साथ तिजारत है और संबंध हैं। इस के अतिरिक्त जब पाबंदियां लगती हैं तो उनकी तेल की पैदावार की दर कम हो कर 70 प्रतिशत से नीचे चली जाती है। लेकिन ISIS की नहीं जाती। उनका तेल उसी तरह समुंद्रों में जा रहा है और crude oil

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 21 January 2021 Issue No.3

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

बोतल में भर के car, boot में ले जाकर तो नहीं export होता। किसी टैंकर पर ही जाता है। ऑयल टैंकर जाते हैं, बड़े बड़े vessel होते हैं।

अत: असल बात यही है कि लोग चाहते हैं कि कोई फ़ित्ना इस्लाम के अंदर पैदा होता रहे और यह असल में मुनाफ़क़ीन का फ़ित्ना है। जो पहले दिन से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में भी पैदा हुआ और बाद में ज़रा बढ़ के हुआ और अब फिर बढ़ता चला जा रहा है। और ये लोग इस्लाम के हमदर्द नहीं इस्लाम के मुख़ालिफ़ीन हैं और बड़ी ताक़तों के हाथों में बेवक़ूफ़ बन रहे हैं और यह इस लिए है कि उनको पैसा मिल रहा है।

एक संजीदा वर्ग भी है जो चाहता है कि हम इस्लाम की कोई सेवा करें तो ये लोग वहां जाते हैं, यूरोप से भी और यूके से भी और विभिन्न जगहों से, आस्ट्रेलिया से भी अमरीका से भी, सब radicalise होते जा रहे हैं। आस्ट्रेलिया से पिछले दिनों ख़बर थी। कुछ लोगों को एहसास हुआ कि यह ठीक नहीं है अब वह वापस आना चाहते हैं लेकिन अब वापसी का रास्ता कोई नहीं। trap हो गए हैं। या लड़ाई करके मर जाओ या जो हम कहते हैं उस के अनुसार dictate होते रहो या बाहर निकलने का प्रयास करो तो तब भी मर जाओ। कोई रास्ता नहीं है। बस वहीं के वहीं रह गए। अब उन लोगों ने संदेश भेजे हैं।

इसी तरह पिछले दिनों एक भाषण में मैंने वर्णन भी किया था कि एक फ्रैंच जर्नलिस्ट को आज़ाद कर दिया गया था वह आया उसने संसार को बताया कि उन्होंने कहा हमें नहीं पता क़ुरआन क्या कहता है, हदीस क्या कहती है। इस से कोई सम्बन्ध नहीं। हमें तो यह पता है कि हम क्या कहते हैं। और अभी उनकी लीडरशिप भी पता नहीं कौन है। पहले अबूबकर बग़दादी का नाम लिया जाता था। फिर जो सैकण्ड इन कमांड था, पिछले दिनों अमरीका ने ऐलान किया कि हमने उस को भी मार दिया। अब तीसरा कौन आया? या इस किस्म के कई हैं और उनके नाम का लाभ उठाया जा रहा है या फिर उस की पिछली डोर किसी और के हाथ में है। डोर ही है बस हिलानी है, कभी इधर ले गए कभी उधर गए।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : आप कहते हैं कि क़सूरवार कौन है? मुसलमानों के ये गिरोह क़सूरवार हैं और यह तो केवल गिरोहों की हद तक है। फिर हुकूमतों की ओर आ जाऐं। हुकूमतें भी पश्चिम की ओर देखती हैं। बड़ी ताक़तों की ओर देखती हैं। और बड़ी ताक़तें ही उनकी डोर खींच रही हैं। कहा जाता है कि सऊदी अरब के बादशाह ने अभी अपनी ओर से बड़ी जुर्रत दिखाई है कि वहां अमरीका ने छ: सात हैडाफ़ स्टेट की मीटिंग काल की तो कहा कि मैं नहीं जाऊँगा अपना प्रतिनिधि भेजूँगा। लोग समझ रहे हैं कि वाह वाह कमाल हो गया। लेकिन लोगों को पता नहीं वह तो बीमार आदमी है, मरीज़ है उस को पता ही कुछ नहीं कि हो क्या रहा है। उसने सब कुछ ही बदल दिया है।

जिसको भेजा है वही ताक़तवर चीज़ थी और वह अमरीका चला गया है। ये भी लोगों की ग़लत-फ़हमियाँ हैं कि वह उनके सामने बड़ा खड़ा हुआ है, कुछ भी नहीं खड़ा हुआ। अमरीका के जो केसिनो (casinos) उनके सिर पर चल रहे हैं। और उनकी अपनी रियासत अमरीका के सिर पर चल रही है। उनकी बागडोर इसराईल के हाथ में है। अब इस्राईल सऊदी अरब को कहता है शाबाश ईरान पर हमला करो और शीयों को मॉरो। तो यह सब अत्याचार हो रहा है

हुकूमतें भी इन बड़ी ताक़तों के हाथ में हैं और वह ताक़तें नहीं चाहती कि कोई देश develop करे। मुझे एक अज़ीज़ ने आकर बताया कि क़तर में बड़ी development हो रही है। मैंने कहा फ़िक्र न करो बेरूत भी एक ज़माना में पैरिस कहलाता था। बग़दाद भी एक ज़माना में यूरोप कहलाता था और लोग कहते थे वाह वाह उनको तो कोई ख़त्म नहीं कर सकता। उन्होंने ऐसी तरक़्क़ी करली लेकिन अब देखो इन दोनों मुल्कों का क्या अंजाम किया है। मैंने कहा जब उनको पता लगेगा कि क़तर की भी लबनान और बग़दाद के बराबर development हो गई है तो फिर उस को ऐसा मारेंगे कि पता चल जाएगा। इसी लिए आप किसी भी ख़ुश-फ़हमी में मुबतला न रहें।

जर्नलिस्ट ने प्रश्न किया "कुछ समय से दुनिया Boko Haram और ISIS की ख़िलाफ़त के बारे में सुनते हैं परन्तु ख़िलाफ़त अहमदिया और उन दूसरी ख़िलाफ़तों

पृष्ठ 1 का शेष

पहुंचाए। मुस्लिम उम्मा को भी अक़्ल दे कि वे आने वाले मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम को मान लें। संसार को भी अक़्ल दे कि वो अल्लाह तआला और उस के बंदों के हुक़ूक़ अदा करने की ओर ध्यान देने वाले हों। अल्लाह तआला प्रत्येक मुल्क में प्रत्येक अहमदी को अपनी हिफाज़त तथा सुरक्षा में रखे और यह वर्ष प्रत्येक अहमदी के लिए प्रत्येक इन्सान के लिए रहमतों और बरकतों का वर्ष बन कर आए और जो ग़लतियाँ और कमियां पछले वर्षों में हम से हो गईं जो अल्लाह तआला की नाराज़गी का कारण बनीं जहां हमें कुछ इनामों से वंचित रखने का कारण बनीं उन से अल्लाह तआला हमें बचाए और अपने इनामों का और फ़ज़लों का वारिस बनाए और हम वास्तविक मोमिन बन जाएं। अल्लाह तआला हमें इन दुआओं की भी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

☆ ☆ ☆ ☆

के बारे में जो कि जर्मन सुनते हैं क्या अंतर है?"

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि

जहां तक ख़िलाफ़त का सम्बन्ध है, यह तो नई ख़िलाफ़त नहीं। Boko Haram वाले claim करते हैं कि हम ख़लीफ़ा, ISIS वाले ये claim करते हैं कि हम इस्लाम के ख़लीफ़ा हैं। सऊदी बादशाह ये कहे या न कहे उस के दिल में यही है कि मैं ख़लीफ़ा हूँ। मराक़श (Moroco) में जो बादशाह है वह ख़लीफ़ा ही कहलाता है, उस को ख़लीफ़ा समझते हैं। फिर इस से पूर्व जब तक इस्लाम का ज़वाल नहीं हुआ, downfall नहीं हुआ, उस समय तक सल्तनत-ए-उस्मानिया में भी एक ख़िलाफ़त चल रही थी। उस समय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि अब कोई ख़िलाफ़त नहीं, अब मैं आ गया हूँ और कुछ वर्ष बाद ही उनकी यह ख़िलाफ़त ख़त्म हो गई।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला ने फ़रमाया कि बात यह है कि किसी भी काम के करने के सिद्धांत होते हैं। हम कहते हैं कि इस्लाम तो बड़ी हिक्मत की शिक्षा देने वाला धर्म है और जब हिक्मत की शिक्षा देता है तो फिर ऐसी कोई बात नहीं होनी चाहीए जो हिक्मत के अनुसार न हो। अब कोई भी हुकूमत क़ायम करनी हो, तो यह कभी नहीं होता कि एक दम आप खड़े हों और ऐलान कर दें कि मैं बादशाह हूँ और सब आपके पीछे हो जाएं या चले जाएं। दुनियावी हुकूमतें भी इस तरह की होती हैं पहले एक ग्रुप बनता है, फिर धीरे-धीरे उस की devepolment होती है, लेकिन वह तो होती ही dictatorship है फिर वह ताक़त (might is right) के उसूल पर चलते हैं। फिर संसार वे हुकूमतें ले ली भी जाती हैं, बादशाह दूसरे मुल्क पर हमला करते हैं और हुकूमतों पर क़बज़ा करते हैं।

अत: इस्लाम हिक्मत का धर्म है। इस्लाम ने प्रत्येक बात की एक दलील दी है। इस्लाम ने बुनियादी तौर पर कहा कि ख़िलाफ़त का सम्बन्ध नबुव्वत के साथ है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि पहले नबुव्वत है, फिर ख़िलाफ़त अला मिनहाज नबुव्वत है। इसी तरीक़ा पर चलने वाली ख़िलाफ़त है जो नबुव्वत के उसूल पर चलेगी। नबुव्वत का उसूल क्या था? नबुव्वत का उसूल यही था कि इन्साफ़ करो, अदल करो, ख़ुदा तआला की ओर लेकर आओ, रहम करो। यदि अत्याचार ही अत्याचार था तो अल्लाह तआला अपने आपको रहमान और रहीम नहीं कहता। यदि अत्याचार ही अत्याचार था तो अल्लाह तआला आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को रहमतुल लिल्आलमीन नहीं कहता, इस्लाम में जहां पर जंगें भी हुईं तो इस की दलीलें क़ुरआन-ए-करीम में लिखी हैं बग़ैर दलील के कोई जंग नहीं हुई। क़ुरआन-ए-करीम ने तो कहा कि तुम बिना कारण हमला न करो और तलवारें न चलानी शुरू कर दो, पहले दूसरे फ़रीक़ से पूछ लिया करो कि तुम क्या चाहते हो? जंग चाहते हो या सुलह चाहते हो? तुम्हारे ऊपर कोई जंग नहीं ठूंसता।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad